Chapter-4

# चौथा अध्याय – गांव की समस्याएँ

विगत अध्याय में कथाकार रामदरश मिश्र के कथा-साहित्य की विषय वस्तु के संदर्भ में सर्वांगण प्रकाश डाला जा चुका है । उनकी कथा में निहित पात्रों की विविध मानसिकताएं और समाजिक परिवेश से जुड़े अनेक आयामी परिदृश्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जा चुका है । प्रस्तुत अध्याय में मिश्र जी की कथा-साहित्य में व्याप्त ग्राम्य परिवेश से जुड़ी विभीषिकाओं ग्राम्य-जीवन में व्याप्त आरोपित प्रदूषण, टूटते मूल्य व्यवस्थाएं, दमन, शोषण, संत्रास एवं विविध समस्याओं से साक्षात्कार प्रस्तुत किया जा रहा है ।

जैसा कि स्पष्ट है कि मूल भारतीय अस्मिता ग्राम्य जीवन में ही अनुभव की जा सकती है । इसके सांस्कृतिक एवं शास्वत मूल्यों का लेखा-जोखा भी किसी ग्राम जीवन की सहज जमीन पर अनुभव किया जा सकता है । नगर सभ्यता की चकाचौंध से दूर अपने अभाव और पीड़ाओं से संत्रास ये गांव जहां एक ओर परम्परा रूप से भारतीय संस्कृति की मूल अर्थ वत्ता को सुरक्षित रखे हुए है । वहीं युगीन परवर्तिक के तहत गांव में व्याप्त अभाव और निर्धनता भी अनेकानेक समस्याओं का मूल कारण बन जाती है ।

कथाकार रामदरश मिश्र ने ग्राम्य परिवेश को स्वंय जीते हुए उसके मार्मिक संवेदनीय क्षणों को विविध कहानियों व उपन्यास में कथांकित करने की प्रयत्न किया है । कथाकार मिश्र की सर्वोत्म विशेषता और उनकी सहज अभिव्यक्ति और जटिल ग्रहण संगठन । गांव में व्याप्त अधकचरी राजनीति और स्वार्थी तत्वो का अधिरूपण विविध कथाओं में पाठक का ध्यान आकर्षित करता है ।

ग्राम्य परिवेश वैसे तो स्वंय ही विविध समस्याओं का पर्याय बन कर रह गया है जिसका कोई वैकल्पिक विधान अभी तक प्रस्तुत नहीं किया गया है । स्वतंत्रता के तीन और चार दशक के बाद भी आज वहां पर पानी और बिजली की हिमायत करने वाले नेतागण उस परिवेश में गहरे में डूबी गरीबी की अस्पष्ट रेखाओं को ढूंढने का अनाहूवतकारी प्रयास करते है । कथाकारने परिदृश्यों में ग्राम्य अंचल की समाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक आदि अनेक समस्याओं का जीवनस्पर्शी विभिन्नध्यायिकों के माध्यम से मार्मिक निरूपण किया है ।

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य प्रतिपाद्य मिश्रजी के कथा-साहित्य में निहित समस्याओं का निरूपण करना है । इस अध्याय में मिश्र जी के कथा साहित्य में गांव की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है । स्वतंत्रता संग्राम के फलस्वरूप देश के बंटवारा होने पर जो विकेन्द्रीयकरण आया । उससे अनेक समस्याएं खड़ी हुई । अंग्रेजो के चले जाने के बाद उनका राजनैतिक प्रभुत्व तो समाप्त हो गया लेकिन सत्ता के लोभ में पड़ने वाले हमारे ही लोगों ने अपनी सत्ता जमाने की कोशिशें शुरू कर दी जो ताकतवर थे वे अपनी शक्ति का भरपुर प्रयोग करने लगे और जो निर्धन व्यक्ति थे, वे कमजोर होने के कारण उनसे डरने लगे । धीरे-धीरे उनका प्रभुत्व स्थापित होने लगा । निम्नवर्ग शोषितों की पीढ़ी में जकड़ता चला गया । इसके परिणाम स्वरूप धनिक वर्ग और अधिक धनिक हो गया और निर्धन व्यक्ति और अधिक निर्धन होता गया जिससे शोषको द्वारा शोषण बढ़ता गया । जिसके फलतः समाज बहुत ही जटिल हो गया । उनकी समस्याएं बहुत ही पेचीदा हो गयी । इन समस्याओं को निराकरण करने के लिये तथा पाठकों की तरफ अपना ध्यान आकर्षित करने के लिये मिश्र जी ने इन समस्याओं को अपने कथा-साहित्य में स्थान दिया । क्योंकि उप० का सम्बन्ध यर्थाथ से है । यर्थाथ का निरूपण करने के लिये प्रत्येक कदम पर जीवन अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है ।

मनुष्य एक समाजिक प्राणी है । समाज में रहकर उसे अनेको राजनैतिक, आर्थिक, समस्याओं का सामना करना पड़ता है । आज के संघर्ष स्व प्रयोगवादी युग में व्यक्ति की आवश्यकताएं भी जटिल होती जा रही है । प्राचीन काल में मनुष्य को जीवन-निर्वाह करना इतना कठिन नहीं था और उसकी आवश्यकताएं भी सीमित थी । पहले लोग थोड़े में ही गुजारा कर लेते थे । एक व्यक्ति कमाता था, दस खा लेते थे । लेकिन आज का जमाना कहां । दस कमाने वाले हो, एक बेकार को नहीं खिला सकते ।

आज का युग सभ्यता का युग है । सभ्यता के भौतिक उपकरण के विकास के साथ-साथ मनुष्य की आवश्यकताओं में भी निरन्तर बढ़ोतरी हो रही है । जिसकी पूर्ति करना मानव के दैनिक जीवन में परम आवश्यक है तथा जो जीवित रहने या कार्य क्षमता बनाये रखने या समाजिक प्रतिष्ठा को स्थापित रखने के लिये अति आवश्यक है।

समाज वादी युग ज्यादातर आशावादीता पर निर्भर रहता है । कभी-कभी तो समय के परिवर्तन के साथ समाज व युग बदलेगा । इसी आशा पर समाज चलता रहता है । परिस्थितियों के अनुसार उसमें समस्याओं के उत्पन्न होने के साथ-साथ उसमें परिवर्तन होता रहता है ।

भारत की अधिकांश जनसंख्या गांवों में निवास करती है । ये लोग अधिकतर खेती पर निर्भर रहते थे । इसके अतिरिक्त दूसरा कोई रोजगार न होने के कारण तथा जनसंख्या की वृद्धि होने के कारण उनके सामने उनके आर्थिक समस्यायें उत्पन्न होने लगी । अनियमित वर्षा, प्रतिवर्ष फसल की बर्बादी आदि के लिये किसान लगातार दरिद्रता और ऋण के भार से दबते चले गये । जिसका फायदा पूंजीपतियों व जमींदारों ने लिया वे किसानों को ब्याज पर पूंजी देकर बेहिसाब सूद बढ़ाते गये । इस प्रकार किसानों का शोषण होता चला गया । अज्ञानता का घोर अंधकार और दरिद्रता का ताण्डव नृत्य होने लगा । जिससे व्यथित होकर उस समय के साहित्यकारों ने ग्रामीण जनता की यर्थाथ स्थिति का विश्लेषण किया और उसको अपने साहित्य में चित्रांकन किया ।

हिन्दी साहित्य में ग्रामीण जीवन से प्रभावित होने वाले लेखकों में से सहाय जी के "देहाती दुनिया" में ग्रामीण जीवन के आर्थिक पक्ष का चित्रण मिलता है । 1933 में निराला ने "अलका" में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का चित्रांकन किया है । 1934 में जयशंकर प्रसाद ने "तितली" में ग्रामीण जनता का सामाजिक दुरवस्था के प्रति आक्रोश तथा अंधविश्वासों के प्रति कुलबुलाहट को व्यक्त किया है । इनके साथ ही प्रेमचन्द जी के तो अधिकतर उप0-सेवासदन, गोदान, प्रेमाश्रम आदि ग्रामीण जीवन को लेकर ही लिखा गया । प्रेमचन्द जी को इस दृष्टि से उपन्यासों का सम्राट कहा जाता है । उन्होने ग्रामीण जीवन के ऐसे-ऐसे जीते जागते चित्र प्रस्तुत किया है । जिनको देखकर मन भाव-विभोर हो उठता है ।

प्रेमचन्द की भांति मिश्र जी ने भी गांव के कछार के जीवन से सत्य को प्रस्तुत किया है । मिश्र जी के कथा-साहित्य का क्षेत्र मुख्य रूप से समाज(ग्राम, महानगर) रहा है । समाज में उन्होने जो देखा, भोगा, उसी के व्याकुल होकर उसे अपनी रचनाओं में शब्दांकित किया । किसी विद्वान ने सच ही कहा है कि रचनाकार

...162...

की दशा उस गर्भवती स्त्री की भांति होती है । जब तक गर्भवती महिला प्रसव नहीं कर लेती है तब तक वह छटपटाती रहती है । उसी प्रकार संवेदनीशील हृदय लेखक के मन में विचार उमड़ते घुमड़ते रहते है । वह भी तभी तक बैचेनी महसूस करता है जब तक वह उसे शब्दांकित नहीं करता है ।

मिश्र जी के मूल संस्कार ग्रामीण परिवेश के होने के कारण उसको उन्होनें बहुत ही नजदीक से देखा व जाना है । वे स्वयं कहते है जब कभी सोचता हूं कि मुझे यह जीवन रस कहां से मिला है तो सबसे पहले मेरी दृष्टि चली जाती है अपने परिवेश पर होश सम्हालते ही मैने अपने चारो ओर एक छोटी सी दुनिया देखी परिवार की, मित्रों की, गांव की, खेती की, खलिहानो की, बाग-बगीचों की और यह दुनिया धीरे-धीरे बड़ी होती चली गयी । ।

===

भारतवर्ष की मूल अस्मिता गांव में ही जिन्दा है । यहां के ग्राम्य परिवेश ही यहां की सही पहचान बन पाती है और ग्राम्य परिवेश शहरी सुविधाओं से बहुत दूर अपने अभाव, संत्रास और कुंठाओ से कुहराया, घुंमाया, छटपटाता रहता है । यदि यह कहें कि समस्याओं का दूसरा नाम गांव है तो यह अतिरेक नहीं होगा । आज राष्ट्र की विधानिक शक्तियां संवैधानिक रूप से यदि रचनात्मक प्रवित्तियों में संलग्न होना चाहती है । तो यहां के भूखे नंगे और अभाव ग्रस्त गांव को नजर अंदाज नहीं कर सकते । गांव में बहुत सी समस्याएं ऐसी है, जो उसकी भौगोलिक, समाजिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों के कारण उद्भूत होती है । इनमें सामान्य रूप से पुष्ट भोज्य पदार्थ की समस्या, शुद्ध पेय जल की समस्या, वस्त्र एवं आवास की समस्या, अर्थात सब मिलाकर रोटी, कपड़ा और मकान की बुनियादी समस्यओं से जुझते ये गांव किसी युद्ध शिविर में संत्रान, थापल योद्धा की तरह है । जो हर सुबह तुरय नाद के साथ जंग के मैदान में उतरने के लिये बाध्य हो जाता है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से ग्राम्यचल में व्याप्त इन समस्याओं को राजनीतिक, समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, भौगोलिक आदि विभिन्न वर्गों में विभाजित करके स्पष्ट किया जा सकता था । किन्तु समस्याएं गांव में अपनी परिभाषाओं के तहत अनुशासित होकर जन्म नहीं लेती बल्कि वहां का संपूर्ण

परिवेश ही समस्यामय है । ये समस्यायें व्यक्ति के सोच से लेकर उसके खाद्य तक बिखरी पड़ी है । कुछ समस्यायें बलात आरोपित की जाती है । कुछ समस्यायें कृत्रिम रूप से जन्म लेती है तो कुछ समस्यायें गांव की अस्मिता के साथ जन्म से ही चिपकी रहती है ।

ग्रामीण समस्यायें व्यक्ति की मानसिकता और उनकी शारीरिक क्षमताओ को अनेक ढंग से विभाजित करती है । अपने अभिप्रेत अध्ययन विस्तार में ग्रामांचल में व्याप्त उन अधिकांश समस्याओं की चर्चा करना हम यहां अशेष समझते है । जो रामदरश के कथा-साहित्य में पत्र-तत्र मिलता है ।

रामदरश मिश्र का कथा-साहित्य इसी ग्राम्य परिवेश के इर्द-गिर्द अधिक रचा पचा है । मिश्र जी स्वंय भी ग्राम्यचल में रहे, जिये है, वहां की मूल समस्याओं को उन्होने निकट से अनुभव भी किया है । मिश्र जी एक संवेदनीय शील कवि हदय भी है इसलिये इस समस्याओं में उनके अंत: स्वर को झकझोरा भी है । यही कारण है कि उनके कथा साहित्य में व्याप्त यह ग्राम्य समस्यायें बड़े ही सार्थक अर्थो में समाविष्ट पायी जाती है ।

यही वह जमीन है वह परिवेश है जिसने कथाकर रामदरश मिश्र को रचा है और यह कथाकार अब तक जिसे अपने विपुल साहित्य में रच रहा है । यही वह अक्षय स्त्रोत है जो कथा के विषय और रचना के मूड में लेखक को भटकने नहीं देता । वे लिखते है । 'यह गांव कछार का गांव है - दो नदियों के बीच घिरे हुए एक बहुत बड़े कछार अंचल का एक गांव । इस गांव के सारे अभाव, विडंबना, अवमानना, प्राकृतिक प्रकोप, के आघात और जिजीविषापूर्वक उनके संघर्ष को मैंने देखा ही नहीं, जिया भी है, मेरे अनुभव से इस गांव के माध्यम से सारे कछार की भयानक गरीबी, पीड़ा, सामुहिक उल्लासों के स्वर, प्रकृति के विविध रंग और गंध, तरह-तरह के अभिशप्त, और उदास चेहरे बिम्ब बनकर पड़े हुए है शायद इन्ही बिम्बो ने मुझे जीने की शक्ति, जीवन के प्रति आस्था और मूल्य प्राप्त किये है, प्रकृति से जूझने की शक्ति और उससे रस ग्रहण करने की सहदयता पायी है । यहीमेरी ठोस जमीन है । जो मुझमें, मेरे लेखन में रही है यह मैं और मेरा लेखन जिस पर रहा है ।[2] यानि कि यह "जमीन" मिश्र जी के लिये बहुत मूल्य वान और महत्वपूर्ण व ठोस है ।

मिश्र जी एक प्रबुद्ध सेनापति की भांति स्वंय उन्होने समाजिक जीवन में संघर्ष किया । उन्होंने अपने आसपास के किसान, मजदूर तथा निम्न वर्ग के जीवन को देखा । समाज की तत्कालीन परिस्थितियां, भुखमरी, गरीबी, बेकारी, स्वार्थपरिता लोगों की कुटनीतिज्ञ तथा अत्याचार को देखकर उनके मन में एक टीस सी उठती है । उन्होनें इन समस्याओं को केन्द्र में रखकर अपने साहित्य में इसका प्रतिपादन किया है । गांव में फैली समस्याओं में जाति भेदभाव की समस्या, बेकारी की समस्या, जमींदार तथा पूंजीपतियों द्वारा शोषित जनमानस की समस्या, शिक्षित वर्ग के लिये रोजगार की समस्या, बाढ़ की समस्या, गरीबी, भुखमरी की समस्या, विधवा की समस्या, राजनीति के फलस्वरूप फैली भ्रष्टाचार, घूसखोरी की समस्या, दहेज की समस्या, अंधविश्वास की समस्या, नैतिक-अनैतिक घटनाओं की समस्याएं, लड़का व लड़की में भेदभाव की समस्या, शिक्षा का अभाव आदि समस्याओं को ध्यान में रख कर उसको अपने कथा-साहित्य में प्रतिपादन करने का प्रयत्न किया है । ग्राम्य समस्याओं को किसी निश्चित वर्ग में विभाजित न करके उनको उनके सहज क्रम से ही उठाकर यहां परखा जा रहा है । इन समस्याओं का विस्तृत रूप से आगें अध्ययन किया गया है ।

जाति भेद-भाव छुआछूत की समस्या :-

प्राचीन काल से हमारे देश में जाति भेदभावना चलती आ रही है । गांधीजी ने भी इस छुआछूत की भावना का विरोध किया था । उन्होने तो हरिजनों के साथ बैठकर स्वंय भोजन भी किया था । धीरे-धीरे अब यह भेद भावना समाप्त हो रही है । लेकिन फिर भी गांव में यह प्रथा मौजूद है । मिश्र जी ने अपने समय में गांव की स्थिति का विश्लेषण किया और इस समस्या की तथा समस्या के निराकरण को अपने कथा-साहित्य में निरूपण किया है । मिश्र जी के उप० पानी के प्राचीर, जल टुटता हुआ, सुखा हुआ तालाब, आकाश की छत तथा अन्य कहानियां में इसका चित्रण मिलता है ।

"इज्जत" कहानी में जाति भेदभाव का वर्णन मिलता है । जमींदार वर्ग वैसे तो हरिजन को छुने, उनके पास बैठने को परहेज करते है । लेकिन उनकी बहू-

बेटियों के साथ खिलवाड़ करना अपना हक समझते हैं । उनकी इज्जत आबरू उनके लिये कोई मान्य नहीं रखती है । क्योंकि वे जमींदार है इसलिये वे जैसा चाहे कर सकते है । महेशसिंह चीखकर बोला था - चले जाओं तुम लोग । क्या हो गया अगर किसी मजूर की बहन से मेरे लड़के ने छेड़छाड़ कर दी । इसमें कौन सी आफत आ गयी । तुम्हारी औरतें तो यों ही टके-टके में बिकती है । बड़ी आयी रजमतिया सती-सावित्री बनने । तुम लोग जाओं यहां से और ले जाओं इस ससुरी को यहां से । 3. ये लोग किसी के साथ कुछ भी कर ले वह जायज है, अधिकार है लेकिन यही इनकी बहू-बेटी हरिजन से छू जाये तो इनकी दशा कैसी होती है । देखिये महेशसिंह की कुलवधु कुएं में कूद पड़ती है । उनको वहां से निकालने के लिये वे लोग सोचते है कि कुएं में उन्हें निकालने के लिये कौन नीचे उतरे । जो नीचे जायेगा वह तो कुलवधु से छुएगा ही । इसके लिये उनके मना में आशंका होती है ।

टार्च से प्रकाश करके नीचे देख लेना चाहिये" रंजन ने सुझाव दिया । नहीं-नहीं ऐसा नहीं होना चाहिये । पता नहीं किस हालत में हो वह । आखिर मिठुआ अंधेरे में उतर रहा था उसके लिये प्रकाश की क्या जरूरत । उसे कुछ हो भी गया तो क्या बनता बिगड़ता है । 4. यानी जमींदारों की इज्जत इज्जत है । और हरिजनों की कोई इज्जत नहीं है ।

"पानी" कहानी में रामदेव बाबू के लड़के रास्ते में बेहोश पड़े थे तथा पानी-पानी चिल्ला रहे थे । रामदरख जब उसे रास्ते से गुजरे तो उनसे यह सहन नहीं हुआ वे इतनी दुपहरी की गर्मी में कहीं आसपास पानी न देखकर अपने लोटे से कुएं में से पानी निकाल कर उन्हें पिला कर उन्हें अपनी पीठ पर उठा कर घर ले आते है । उन्हें घर आता देखकर रामदेव बाबू बिलख पड़ते है ।

तब क्या इन्हें पानी पिलाया ? तूने पानी पिलाया ? बाबू साहब उछक कर खड़े हो गये । किस चीज से पिलाया ? और वहां कोई चीज भी ही कहां ? संजोग से हमारे पास लोटा-डोरी था । संजोग से वहां कुंआ भी था बस पिला दिया।

हरामी तूने मेरे बेटे को अपने लोटे से पानी पिलाया ? नीच ?

तो क्या करता बाबू साहब, पानी और कहां से लाता ? मालिक परमेश्वर

...166...

बाबू की हालत बहुत खराब थी, पानी नहीं मिला होता तो न जाने क्या हो गया होता ।

चुप बदमाश, न जाने किस जनम का बैर साधा है - मेरा धरम नाश करके ?

उन्होंने गुस्से से खड़ाऊं खींचकर मंगल पर दे मारा । 5

यहां पर एक तो मंगल ने इन्सानियत के नाते उनकी मदद की उनको पानी पिलाकर उसके प्राणों की रक्षा की, दूसरे वे उनको दुतकारते है । ये इन्सानियत को इतना अहमियत नहीं देते बनस्बित खोखले धर्म को । वे हरिजनों के हाथ का पुआ लेने से मृत्यु को गले लगाना बेहतर समझते है ।

मिश्र जी ने यहां पर केवल इस समस्या को प्रस्तुत ही नहीं किया है वरन् इसको दूर करने, निराकरण करने में सफलता भी प्राप्त की है । इसी कहानी में रामदेव बाबू का बेटा अपने पिताका हरिजनों के प्रति क्षोभ देखकर उठकर खड़ा होता है और पिता को उसके झूठे ठकोसले का विरोध करके हरिजनो के साथ रहने की बात करते है । यह देखकर रामदेव बाबू की आंखों में वेदना उभर आती है । उनकी दृष्टि में नया भाव पैदा होता है । इसी प्रकार "आकाश की छत" उप० में जाति-पांति का निराकरण किया है । देखिये मुझे प्यास लगी है, स्यमती पानी नहीं पिलाओगी, पानी, मैं कैसी पिलाऊं, बामन के लड़के को ? क्यों बामन का लड़का होना कोई गुनाह है । स्यमती ? क्या उसे प्यास लगी हो तो पानी नहीं मांग सकता ?

गुनाह तुम्हारा बामन होना नहीं है । गुनाह है एक अछूत जाति की औरत से पानी मांगना । वह पानी तो पिला देगी लेकिन सोचो तुम्हारी जाति वाले तुम्हें कहां रखेंगे और फिर तुम्हे तो दोष कम देगें । मुझे ज्यादा गाली देगें । खैर, मुझे अपनी चिन्ता नहीं है, तुम्हारी है । 6

फिर स्यमती उसके जोर-जबरदस्ती करने पर उसे पानी पिला देती है ।

"बसंत का एक दिन" कहानी में छुआछुत को मान्यता न देकर उसका निराकरण किया है । इस कहानी में बाहमन हरिजन के घर खाना तक खाता है ।

जरा पानी पिलाओ, प्यास लगी है ।

पानी मैं पिलाउं ? अरे बाबू ई का कहते है ? हम अछूत है, हमारे हाथ का पानी

पानी पियेगें आप ?

अछूत तुम नहीं हो, ये गांव वाले है। तुम लोग पवित्र हो, पानी पिलाओ, बहुत प्यास लगी है।

जयराम ने झपटकर अपना लोटा निकाला। कोइई के गगरे में सो पानी डाला और गट गट पी गया। फिर उसके बाद जयराम ने उसके यहां खाना भी खाया। 1

साधारण से भी सुन्दर स्त्री होती है। उसपर सबकी लोलुप दृष्टि पड़ती है। फिर उसको पाने की लालसा में जाति-भेद को नहीं देखा जाता है। स्त्री के लिये सुन्दर होना भी एक समस्या है। यदि हो तब सबकी निगाहो का शिकार होना पड़ता है। यदि नहीं हो तो उसकी शादी के लिये समस्या होती है।

"पानी के प्राचीर" में बिंदिया चमाइन खूबसूरत जवान लड़की थी। उसकी इस जवानी को देखकर सभी उसे पाने के लिये आतुर रहते थे। वह यह जानती थी। अंधेरे में उसे चूसकर ये बाभन लोग उजाले में पंडित बने घूमेगें और उसकी छाया से भी बचने का ढोंग रचेगें। इनमें देने की कसक बिल्कुल नहीं है बस बस कुछ हजम कर जाने का हौसला है। कैसे है ये बाभन कुत्ते - रात में विस्टा तक खा लेगें और दिन को ओंठो पर पान की पीक पोत कर महकने की कोशिश करेगें। 2

यहां पर ब्राह्मण वर्ग के लिये तीव्र कटु आलोचना की गयी है। इनकी तुलना गली के कुतों से की गयी है जो दुम हिलाकर चलते रहते है। ब्राह्मण वर्ग जो सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। यहां कर्म की वजह से सबसे निम्न वर्ग में संज्ञा दी गयी है। व्यक्ति जाति से बड़ा नहीं होता है बल्कि अपने कर्मो से महान होता है।

चमाइन-बाप रे बाप चमाइन घर में रख कर उसका छुआ खाता होगा-पीता होगा, ब्राह्मण के लिये चमाइन का छुआ खाना-पीना कितना बड़ा पाप है। बैजनाथ पर हम लोग प्रेम से दबाव डालेगें कि ये उस हरामजादी छोकरी को मार कर अपने घर में से खदेड़ दे और मैं कल ही उसे अपनी जमींदारी में से उजाड़ फेकूंगा। 3

धिरेन्दर बामन का लड़का है यह तो उसका जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह चमाईनों को गाली दे, मारे, उनका जैसा चाहे उपभोग करे, किन्तु चमार की छोकरी

...168...

उसे गालियां दे, ताव दिखाये, यह वह कैसे बर्दाश्त कर सकता है । 10

इसके साथ ही इस उप0 के अंत में सुराज मिलने पर हरिजन जमींदारों का सामना करने के लिये उत्साह जुटाने को तैयार रहते है । "जल टूटता हुआ" उप0 में छुआछूत की भावना तो नहीं दिखायी पड़ती है । लेकिन उसमें जाति-भेदभाव को बताया गया है । तथा उसका निराकरण करने की कोशिश भी की गयी है ।

हरिजनों में भी कुछ ऐसी औरते होती है जिनमें विवेक होता है । जो तर्क से काम करती है । इनकी जाति में बुद्धिवादी भी है जो ललकारतीं वे अन्याय के खिलाफ विरोध कर सकती है । लेकिन समाज का प्रभाव के कारण उस वर्ग को दबा दिया जाता है । वह यह सब जानते हुए कभी कभी उत्साह से इनके खिलाफ आवाज उठाती है ।

इसमें संवगी हरिजन जाति की तरफ से बाह्मनों को ललकार कर कहती है यदि हमारा खून-खून नहीं है । हमारी इज्जत-इज्जत नहीं है तो हमारा वोट ही वोट क्यों है ।

यदि बाभन छोकरा, छोकरी ही क्यों सम्मानित वयस्क भी हरिजन की बेटी पर जुल्म करता है और कोई आफत नहीं आती तो हरिजन छोकरा द्वारा बामन की लड़की पर किये गये जुल्म पर आफत क्यों? 11

कुंजू बाह्मन तो सबके सामने बदमी कहारिन को अपनाता है । समाज को सम्बोधित करते हुए कहता है ।

इस गांव में क्या रहूं - बच्चा होने पर नीच, पापी और कमीने लोग भी कहेगें कि कहाइन को बच्चा है । लोग हमारा छुआ नहीं खायेगें, ताने मारेगें । इसलिये जहां कोई हमें जांति-पांत से नहीं पुकारेगा, वहां पर हम चले जायेगें । 12

"सूखा हुआ तालाब" उप0 में तो अस्पृश्यता को ज्यादा मान्यता देते है । आरती होने लगी, प्रसाद बंटने लगा । मास्टर धर्मेन्द्र और दयाल प्रसाद बाँट रहे थे । कुछ अछूत लड़के दूर खड़े हो गये । धर्मेन्द्र उनकी फैली हुई हथेलियों पर ऊपर से प्रसाद छिटकार रहा था । प्रसाद लेने के रेलपेल में एक हरिजन बालक ने अपना हाथ जोर से ऊपर बढ़ाया तो मास्टर के हाथ से छु गया और उन्होने तड़ाक से एक तमाचा उसके गाल पर जड़ दिया । देखो सकले चमरिया ने प्रसाद छूकर अपवित्र कर दिया । अब इस प्रसाद का क्या होगा ।

अरे, जो हुआ सो हुआ, अब छोड़ो यह सब । इस प्रसाद को अछूतों में बांट दो और ब्राहमणों के लिये दूसरा प्रसाद ले लो । 13 जबकि यही धर्मेन्द्र और दयाल आरती से पहले चमइया हरिजन की अस्मत लूट कर आये थे । यही शिवलाल दिन को तो घर में हरिवंश पुराण की कथा करवाते है तथा रात में नींद नहीं आने के कारण हरिजन चनइया के यहां जाने के लिये सोचता है ।

अर्थात दिन में आध्यात्मिक कार्यों में निवृत होते है और रात्रि में दुराचारी। मिश्र जी ने ऐसे लोगों का पर्दाफाश किया है जो छिप-छिप कर ऐसे घिनौने कार्य करके पवित्रता का ढोंग करवाते है । इस उप० में भी ब्राह्मण लोग चमारिन के साथ अनैतिक सम्बन्ध स्थापित करते है । इस प्रकार मिश्र जी जाति-पांति के भेदभाव के साथ अस्पृश्यता का चित्रण भी किया है । एक ओर तो ब्राह्मण लोग हरिजनों के साथ छू जाने में भी अपना अधर्म समझते है । चाहे उनको अपने प्राणों की आहुति ही क्यों नहीं देनी पड़े । वे इस खोखले धर्म का पालन करते है । अगर ऊंची जाति वाले हरिजनों को छूने में अधर्म समझते है तो वे उनकी बहू-बेटियों के साथ सम्बन्ध क्यों स्थापित करते है । क्या ऐसा करने से उनका धर्म अनुमति देता है ।

मिश्र जी ने जाति-भेदभाव को मिटाकर ब्राहान को हरिजनों के साथ भोजन करने तथा वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके एक नया पथ प्रदर्शन किया है ।

आज आधुनिक युग में छुआछूत व जाति-भेदभावना पर अंकुश लग गया है । बल्कि हरिजनों को सामान्य लोगों से अधिक अधिकार दिये जा रहे है । ताकि उनके मन में से हीन-भावना समाप्त हो जाये । समाज में रहने वाले सभी व्यक्ति समान होते है । जिस हाड़-मांस से ठाकुरों का शरीर बना है । उसी हाड़-मांस से हरिजनों का । तो क्या बात है कि ये लोग तो पूजे जाते है । और हरिजनो की पूजा जूतों से होती है । सभी व्यक्तियों को ईश्वर ने सामान्य बनाया है । ये तो जन्म के आधार पर मनुष्य ही मनुष्य में भेदभाव करता है । आज हम सबको समान समझना तथा समान व्यवहार करना चाहिये । तभी इस प्रणाली का अंत होगा। आज सरकार हरिजनों को मुक्त शिक्षा की व्यवस्था कर रही है । उनको नौकरियों के लिये विशेष व्यवस्था कर रही है । उनके लिये अलग सीटें रखी गयी है ।

...170...

2) बेकारी की समस्या :

आज भारत को गुलामी की जंजीरों से मुक्त हुए काफी साल गुजर गये । लेकिन देखने में प्राय: मद् आता है कि उसकी अर्थ व्यवस्था आज भी बहुत कमजोर है । इसका कारण देश में जनसंख्या विशाल होने के कारण गरीबी, भुखमरी, बेकारी पहले से ही गुजर रही है ।

गांव की जनता ज्यादातर खेती पर निर्भर रहती है । अनियमित वर्षा, प्रतिवर्ष फसल की बर्बादी के कारण किसान पूंजीपतियों व जमींदारों के कर्ज से दबते गये और उन लोगों के काफी खेत रेहन पर चढ़ते गये । तथा जीविका का दूसरा साधन न होने के कारण वे लोग बेकार हो गये । जो लोग गांव में थोड़ा-बहुत पढ़ लेते थे । उनको भी नौकरी प्राप्त नहीं होती थी । खेती न होने के कारण ज्यादातर किसान व मजदूर बेकार हो गये ।

मिश्र जी अपने उप0 "पानी के प्राचीर" "जल टूटता हुआ" तथा "दूसरा घर" में तथा अन्य कहानियों में इस समस्या को लिया है । आज भी यह समस्या तीव्रतर बढ़ती ही जा रही है । "पानी के प्राचीर" में उप0 में नीरू थोड़ा पढ़ने के बाद घर की परिस्थिति को देखकर वह नौकरी ढूंढने लगता है ।

नौकरी-नौकरी-नौकरी उसके दिमाग को चाट रही थी फिर भी कहीं नौकरी नहीं । दुरदेखा राय की नौकरी - दो महीने में बस रुपये-दगाबाजी-चोरी, मजूरों का गला काटना- यह सब नहीं हो सकता मुझसे । 14 "जल टूटता हुआ" उप0 में स्वतंत्रता मिलने के बाद भी जमींदारों की जमींदारी चली जाने पर भी वे उसी तरह सब पर रोस चलाते है । तथा अपना कार्य करवाते है । न करने पर उन्हें फटकारते व मारते है । ऐसे ही जगपतिया एक जमींदार के यहां काम करता था ।

आपके यहां हमारे खानदान की परवरिश नहीं हो सकती । कितने महीने हो गये, मुझे एक पाई भी नहीं मिली, एक मेरा ही पेट तो नहीं न है कि आपके यहां इसे जिया लूं । घर के लोग क्या खायेगें । हम दोनों भाई आपके यहां खटते है । तो खेतों में क्या अपने आप अन्न पैदा हो जायेगा । और कुछ होता भी है तो बाढ़ में क्या, पहली बरखा ही में डूब जाता है । 15

खेतों में कुछ काम न होने से, तथा सारी फसल बाढ़ की चपेट में आ जाने से सतीश भी बेकार हो जाता है । ऐसी स्थिति में उसके पिता अमलेश कहते है । मेरी इच्छा तो नहीं होती तुम्हारे साहित्यक व्यक्तित्व को जमींदारी के भाड़ में झोंकने की, लेकिन उनकी बात टाल पाना कुछ सरल नहीं है और सबसे बड़ी बात यह है कि सतीश, मैं तुम्हें टूटता हुआ नहीं देखना चाहता । तुम्हें यह बेकारी कितनी वैध रही है । इसे मुझसे अधिक कौन समझेगा ? काम जमींदारी का है । लेकिन तुम्हारा सूनापन कर जायेगा । 16

गांव में जो थोड़े बहुत पढ़े लिखे मास्टर है । उनको भी कई कई महीने तनख्वाह नहीं मिलती है । कहा जाता है कि ज्ञान का दान से बढ़कर कोई दान है । लेकिन दान करने से तो व्यक्ति का पेट तो नहीं भरेगा । जीविका चलाने के लिये कुछ उपार्जन भी तो चाहिये न ।

बच्चों के लिये तो कुछ अंट भी गया, उसे और उसकी पत्नी को भूखे पेट सो जाना पड़ा । तीन महीने से तनख्वाह नहीं मिली, खेत में कुछ हुआ ही नहीं, उधार कब तक देगा कोई ? 17

"टूटे हुए रास्ते" कहानी व "दूसरा घर" उप० आदि में यह बताया गया है । जब गांव में खेती वगैरह के साधन नहीं रह जाते है । और व्यक्ति थोड़ा पढ़-लिख जाता है तो वह जीवकोपर्जन के लिये शहर की तरफ जाता है । जहां पर वह कुछ भी छोटा-मोटा काम करके अपना तो पेट पाल सकता है। तथा शहर की भौतिक वस्तुओं को चकाचौंध होकर भी व्यक्ति शहर की तरफ भागता है । शहर में तो जीविका चलाने के लिये अनेक साधन है । लेकिन गांव में तो केवल किसान खेती पर ही निर्भर हो जाते है । गांव में पूंजीपतियों व जमींदारों का आधिपत्य होने के कारण किसान लोग स्वंतत्र होकर कुछ कर भी नहीं सकते है । खेती में नुकशान होने पर या फसल के नष्ट होने पर किसान लोग जमींदार से कर्ज लेते है । उनकी इस स्थिति का फायदा उठाकर जमींदार ज्यादा बेकार लेने लगते है । किसान ज्यादा बेकार हो गये है । उनका शोषण बढ़ता चला जाता है । जिसका आगे चर्चा की गयी है ।

...172...

3§ जमींदार तथा पूंजीपतियों द्वारा शोषित जनमानस की समस्या :

जैसा कि विगत समस्या में बताया गया है । व्यक्ति की बेकारी का फायदा धनिक वर्ग उठाते है । गांव के लोग भाग्य के भरोसे पर ही जीवन यापन करने के आदी हो चुके है । यहां की सरकार मिश्रित अर्थव्यवस्था पूंजीपतियों और प्रशासनिक अधिकारियों को तो सम्पन्न बनाती है किन्तु मध्यवर्गीय जनता की अर्थ-व्यवस्था उतनी ही ढीली होती जा रहीं है । जिससे कारण शोषित द्वारा शोषण बढ़ता जा रहा है । मिश्र जी ने अपने उप0 "पानी के प्राचीर", "जल टूटता हुआ", "दूसरा घर", आकाश की छत" तथा अन्य कहानियों में यह समस्या दिखायी देती है ।

"पानी के प्राचीर", "जल टूटता हुआ" में जमींदार या पूंजीपति किसानों के खेतों में आग लगवा देंगें या फसल कटवा देगें । ताकि वे लोग कुछ उत्पादन नहीं कर सके । और मोहताज होकर उनसे ऋण ले ले । ताकि वे उनसे सूद पर सूद लेते रहे तथा उनके खेतों को रहेन पर रखते है । इस प्रकार उनका शोषण व आंतक बढ़ता ही चला जाता है ।

"पानी के प्राचीर" में गजेन्द्र बाबू के यहां उनके मुंशी किसानों से लगान वसूल करते है । नहीं देने पर मुंशी सबको बारी-बारी से मुर्गा बनाकर पीट रहे है, चिनचिलाती धूप चोट के ऊपर लेपन कर रही थी । मुंशीजी गरजते जा रहे थे - "मैं सबकी नस पहचानता हूं । तुम सब साले चोट हो । बिना मार तो सुनते ही नहीं हो । लात के देवता हो बात से क्यों मानोगे ।

किसान कसाई के हाथ में पड़ी गाय की तरह निरीह आंखों से दया की भिक्षा मांग रहे थे । 18

जमींदारी प्रथा खत्म होने पर भी "जल टूटता हुआ" में जमींदार सिपाहियों सेउसी तरह आदेशानुसार कार्य करवाते थे । उनके मना करने पर मारते-पीटते थे । दो रूपये महीने और खाना कपड़ा । दो रू0 तो गये चूल्हे-भाड़ में, खाना-कपड़ा भी मयस्सर नहीं । सिपाहियों के फटे अंगरखे, फटी धोतियों उसकी आंखों में उभर आई । 19

हलवाहों को पचीस-तीस रूपये महीने मिलते है और औरतों बच्चों को आठ आना रोज, महंगाई कितनी बढ़ गयी है - अन्न का दाम तो चौगुना-पचगुना

वसूल करेंगे और खलवाहों को दूनी मजदूरी देने में उनकी छाती फटेगी । २०

"दूसरा घर" उप० में पेंकू ने जमींदार से 300 रु० कर्ज लिया था । जो सूद दर सूद इतना बढ़ता गया कि वहइतना देने के बाद भी मूलधन उसी तरह बना रहा । इसके लिये वह अपना गांव छोड़कर शहर में दिन में सब्जी बेचकर, रात में मजदूरी करके तथा आवश्यकता पड़ने पर अपना खून भी बेचकर कर्ज उतारने की कोशिश करता रहा । अपने परिवार से दूर, सारा दिन खाली पेट काम करना और अंत में पेड़ के नीचे निवास करते हुए उनका अंत हो जाता है ।

इसी तरह सेठ द्वारा शोषित स्थिति "आकाश की छत" उप० में भी देखने को मिलती है । सेठ के यहां काम करने वाले मजदूरों को मजूरी की ऐवज पर खेत देते है । लेकिन मजदूर तो सारा दिन सेठ के यहां काम करेगें तो अपने मिले हुए खेत कब जोतेगें । यदि वे बीमारी की स्थिति में सेठ के यहां काम पर नहीं आते है । सेठ उनको दिये गये खेत जबरदस्ती छीन लेता है । इस तरह वह दोनों तरह से शोषित होते है । एक तो उन्हें मजदूरी मिलती नहीं, दूसरे खेत भी वापिस चले गये तो उनकी आजीविका कैसे चले । गलत कार्य करवाने के लिये वे कुछ गुंडे भी पाल कर रखते है । जो समय समय पर मजदूरों पर अत्याचार का आंतक बिछाये रखते है । है । "सर्प-दंश" कहानी में भी इसी तरह की कहानी है । जो जबरदस्ती खेत ले लेने पर उनके द्वारा बोयी गयी फसल में से कुछ फलियां तोड़ने पर "चोरी के जुर्म में" अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है । फसल तोड़ते समय सांप के काटने पर उसके विष से तो छुटकारा मिल जाता है । लेकिन स्वार्थी निर्दयी प्रधान रूपी विष से उसको छुटकारा नहीं मिलता है । वह उसका निर्दयता से अंत कर देता है ।

इस प्रकार से जीते-जागते घटनाओं को देखकर तो पत्थर दिल भी द्रवित हो उठते है । मिश्र जी ने प्रेमचन्द की भांति समाज के उन तत्वों का जो शोषण द्वारा बुरी तरह से पिस रहे है । अपने आपपर काबु नहीं रख पाते, वे उसका विश्लेषण किये बिना नहीं रह सकते ।

आज आधुनिक युग दिन पर दिन स्वार्थी होता जा रहा है । वह केवल अपने स्वार्थ के लिये मानवता पर अत्याचार करता चला जाता है । वह कर्ज देकर उनके रक्त की एक एक बूंद चुस लेना चाहते है । वे बेचारे उनको अपना मां-बाई समझ कर

...174...

सब कुछ स्वीकारते चलते है । और जिन्दा लाश को ढोते चले जाते है । आज मानव मानव को इंसान नहीं समझता है । उसके भीतर का शैतान क्रूर दिल मासूम निरीह लोगों पर जानवरों की तरह अत्याचार करते है । वे इन्सानियत को भुल जाते है ।

उप0 के अंत में मिश्र जी ने आशावादिता भी बतायी है । यहीं किसान व मजदूर एक जूट होकर अपना दल संगठित करते है । तथा अन्याय के प्रति मुकाबला करने की कोशिश करते है । जिससे वह स्वंतत्र रूप से जीये बनिस्वत उनके गुलाम होने से जीवन यापन कर सकें ।

4) शिक्षित वर्ग के लिये रोजगार की समस्या :

रोजगार की समस्या आज बहुत ही भयानक रूप लेती जा रही है । गांव में कृषक वर्ग का मुख्य व्यवसाय तो खेती, रहता ही है । परन्तु आर्थिक अक्षरता के कारण खेती के साधन पुराने है । उसमें पर्याप्त आमदनी न होने के कारण आज बहुत से लोग पढ़-लिख गये लेकिन शिक्षित होने के बावजूद भी उनके लिये रोजगार की बहुत बड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है । बहुत कम आमदनी के बावजूद भी वह बहुत मुश्किल से पढ़ पाते है । लेकिन पढ़ने के बाद भी उनको नौकरी के लिये गांव छोड़कर शहर आना पड़ता है । गांव में इस प्रकार की पूर्ति असम्भव है । मिश्र जी ने कुछ ऐसे ही लोगों की समस्याएं को रखा है । जो पढ़ने के बाद भी बेकार है । यह समस्या केवल गांव में व्याप्त नहीं है । अपितु पूरे भारतवर्ष में छायी हुई हैं । शहर में भी कितने पढ़े-लिखे नवयुवक बिना रोजगार के इधर-उधर भटक रहे है । जिसकी चर्चा हम आगे नागरीय समस्या में करेगें ।

"पानी के प्राचीर" उप0 में गरीबी के बावजूद भी जो थोड़ा बहुत पढ़ लेते थे, उनको नौकरी नहीं मिलती थी । गांव में प्राइमरी स्कूल चलाने के लिये मास्तरों की जरूरत थी । लेकिन मास्तरों को वेतन नहीं दिया जाता था । उनसे कहा जाता था - यह तो देश सेवा है, अपने जवार के लड़कों का उद्धार करना है, वेतन-सेतन की क्या बात है । 21

फर्स्ट क्लास पास होने के बाद भी योग्य व्यक्ति को उसकी योग्यता के आधार पर नहीं लिया जाता था ।

हां, तो कैसे आये के नीरू भाई ?

प्राइमरी स्कूल की मास्टरी के चुनाव में । हां, मगर किसी की सिफारिश भिड़ाई है । नहीं, मगर उसकी क्या जरूरत है ? मेरी सनद तो फस्ट क्लास है। लोग मेरे जवाबों से काफी प्रसन्न दिखे । नीरू ने भोलेपन से उत्तर दिया । 29

-"जल टूटता हुआ" व "दूसरा घर" उप० में गांवों में राजनीति के आ जाने से योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति नहीं की जाती थी बल्कि पढ़े लिखे व्यक्ति नौकरी के लिये शहर की तरफ जाने लगे । क्योंकि गांव में उनका भविष्य असुरक्षित दिखायी देता था ।

5) बाढ़ की समस्या :

बाढ़ एक प्राकृतिक प्रकोप है । जिससे बचना बहुत ही मुश्किल है । बाढ़ की चपेट में गांव के गांव समाप्त हो जाते है । आज भी यह स्थिति उसी प्रकार से है । परन्तु फिर भी आधुनिक तकनीकि के कारण इसको रोकने के प्रयत्न किये जाते है । मनुष्य को इसके लिये कुछ सुविधायें भी हो जाती है । पहले के जमाने में तो केवल हाथ पर हाथ रखकर देखने के अलावा कुछ कर नहीं सकते थे । क्योंकि उनके पास सुविधाएं नहीं थी । अब इसमें काफी सुधार आया है ।

मिश्र जी ने अपने समय में गांव में इसकी जो स्थिति देखी, उसका विवरण अपना रचनाएं में किया है । क्योंकि गांव वाले अपनी खेतीहर फसलों पर ही निर्भर रहते थे । यदि बाढ़ के आने से या सूखा पड़ने से उनकी खेती नस्ट हो जाती थी । तो उन लोगों की स्थिति बहुत ही दयनीय हो जाती थी । ऐसे समय में उन लोगों को बीमारी तथा सांप, बिच्छू जैसे जीवजंतु के काटने का भी भय रहता है । जीते हुए भी एक डर व संत्रास को लेकर जीते है ।

"पानी के प्राचीर" उप० में मिश्र जी ने गांव की यर्थाथ स्थिति का वर्णन करते हुए बताया है —

चारों ओर शोर हो रहा है, रास्ती बाढ़ रही है, गोर्रा बढ़ रही है मदना में पानी गिर रहा है, खोजवा नाला भर गया ताल के खेत में पानी घिर रहा है । शीतनवा नाले में भी पानी आ गया । अब खेत बचना मुश्किल है । बांध बंध रहे है ।

यह बांध ही गांव का सहारा है, टूटेगा तो परलय हो जायेगा । लोग लहलहाते खेतों की फसलें उखाड़ उखाड़ कर अपने बेटे के शव की तरह कंधे पर लाद लाद कर घर ला रहे है । 23

"जल टूटता हुआ" उप0 में बाढ़ का भयानक कुत्स्य चित्रण मिलता है । बाढ़ का वेग हाहाकार करता हुआ आता है । उफनती हुई फसलें देखो देखो डूब गई । जैसे किसी बाप के सामने उसका लड़का मार डाला जाये । 24

मां का मर्मबिधी चीत्कार, उजले उजले फेन उगलती हुई बाढ़ की लौटती लहरें और लहरों पर बहती एक नन्हीं लाश । 25

इस प्रकार बाढ़ के भयानक करुण दृश्यो का वर्णन मिलता है । मिश्र जी ने केवल इसकी भयावहता का ही वर्णन नहीं किया है बल्कि इसको रोकने के लिये प्रयत्न पर भी जोर दिया है ।

हर साल तो बांध बांधा जाता है, टूट जाता है, फिर क्या फायदा है इस मेहनत से ? सतीश ने जवाब दिया- मैहनत बेकार नहीं है । कभी न कभी तो वह रंग लायेगी ही । हर साल फसल बह जाती है तो हम हर साल फसल क्यों बोते है, नहीं बोना चाहिये । किन्तु आशा बड़ी बलवान है । वह सोचती है, शायद इस साल बच जाये फसल। यह आशा न होती तो मानव जाति कब की खतम हो गई होती । अतः हम लोगों को बाँध बंधाना चाहिये।26

"आकाश की छत"उप0 में भी बाढ़ के विनाश लीला का चित्रण मिलता है ।

इस बाढ़ ने न जाने कितनी जानें ली है, कितने गांव इसमें तड़प कर डूबे है । कितने लोगों की जीविका यह छीन लेती है । और लोग भूख से तड़प तड़प कर मरते है । कितने बच्चे अनाथ हो जाते है ।

उछलती हुई लहरें, पानी में गले तक डूबे असहाय छोटे छोटे पेड़ । लहरों में अभ्यूभ होकर बहती हुई आदमियों और जानवरों की लाशें, छप्पर, डालियाँ । 27

फिर भी एक आशा थी, भविष्य के प्रति एक आस्था थी जो उन्हें बीज बोने के लिये प्रेरित कर रही थी । व्यक्ति को निराश नहीं होना चाहिये । बल्कि उत्साह, हिम्मत रखकर कार्य करते रहना चाहिये ।

आज सरकार की तरफ से बाढ़ को रोकने के लिये जगह जगह पर बांध बनाये

...177..

जा रहे है । समय समय पर उनके लिये व्यवस्थाएं व सुविधाएं भी प्रदान की जाती है । कुदरत भीसमय समय पर अनेक रंग दिखाती है । कभी तो वर्षा की अधिकता होगी और कभी एकदम सूखा । बरसात का कहीं नामोनिशान नहीं । इन दोनों स्थिति में कृषकों को ही भुगतना पड़ता है । दोनों ही स्थिति में उनकी फसल को नुकसान पहुंचता है । या तो फसल उत्पन्न नहीं होगी या बाढ़ के साथ बह जाती है । एक समस्या के समाधान करने में दूसरी समस्या निकल आती है ।

धीरे धीरे बाढ़ खिसक गयी । धरती विधवा के समान यहां से वहां तक उदास सपाट और भीगी हुई पड़ी थी । किसानों की पेशानियों पर चिन्ताओं और परेशानियों की मोटी मोटी लकीरें उभर आयी थी । कहां जाये ? क्या करें? क्या पहनें ? खेत में बोने के लिये बीज कहां से लायेंगे ? ये उसके सवाल उनके दिमाग में उभर रहे थे । कोई कहीं भाग रहा था, कोई कहीं । मगर किसी को भी नौकरी मिलने का निश्चय नहीं था । 28

सूखा पड़ने पर तो किसान लोग दाने दाने के लिये मोहताज हो जाते थे । उनकी ऐसी स्थिति देखकर तो संवेदनीय हदय तो द्रवित हो उठता है । गांव भांय-भांय कर रहा था । रात को जलते हुए चूल्हे मरघट की बुझती हुई चिता की लपटों की तरह लगते । 29

जलते हुए चूल्हे से अर्थ यहां पर तसल्ली देना है । कि घर में चूल्हा जला है । लेकिन अनाज के न होने के कारण बिना पकाये ही वह बूझता हुआ ऐसा प्रतीत होता था । मानों लोगों की जीने की आस्थाएं, इच्छाएं ही समाप्त हो गयी है । वे जीते हुए भी एक जिन्दा लाश को ठोये हुए जी रहे है । मिश्र जी उनके हदय की भीतर तक की गहराइयों में विलीन हो जाते है ।

गांव वालों की दयनीय स्थिति होते हुए भी स्वार्थी राजनीतिज्ञ लोग केवल भाषणों द्वारा ही चिन्ता व्यक्त करते है । हकीकत में कोई कदम नहीं उठाते है । वे भाषा में कहते है -

देश संकट में है, अन्न का अपव्यय नहीं करना चाहिये, समारोहों में एक सौ आदमी से अधिक को नहीं खिलाना चाहिये - यह एक जुर्म है । जबकि सौ आदमी बाहर खाते है तो चार सौ आदमी परदे के पीछे । और नेता लोग देश का काम-धाम छोड़कर इस प्रकार का अपव्यय करने वाले धन पतियों के बेटी-बेटों को आशीर्वाद

देने आते है । 30

यानि वे स्वंय चाहे कितना भी अपव्यय कर ले । ऐशो-आराम का जीवन व्यतीत कर ले । लेकिन इन मासूम निरीह लोगों की दशा देखकर भी उनका हृदय नहीं पसीजता है । वे उनकी सही तौर से मदद नहीं करके बल्कि भाषणों से ही उन्हें उत्साहित करते रहते है । जनता का मनोबल बहुत ऊंचा है, अपनी सारी कठिनाइयों के बावजूद भी वह बड़ी बहादूरी से जूझ रही है, मैं जनता के इस वीर-भाव से बहुत प्रभावित हूं । 31

इस प्रकार मिश्र जी ने उन स्वार्थी राजनीतिज्ञ पर कटाक्ष व्यंग्य किया है । जो उनकी झूठी खुशामद करके केवल शाब्दिक रूप से चिन्ता व्यक्त करके उन्हें हतोत्साहित करते है ।

गांव में बाढ़ आदि आने पर पानी के साथ सांप, बिच्छू जैसे अनेक जीव-जन्तु निकलते है । जिसका सामना ही इन्हीं लोगों को करना पड़ता है । गरीबी के कारण टूटे फूटे मकानों में कहीं से पानी के साथ सांप वगैरह निकल आते है । जिनके काटने से तथा समय पर उपचार न होने से व्यक्ति की मृत्यु तक हो जाती है । क्योंकि अंधविश्वासी गांव वाले केवल वैद्य, व झाड़ फूंक वालों पर ही विश्वास रखते है । दूसरा गांव में चिकित्सक की कोई व्यवस्था नहीं है ।

दूसरा सूखा पड़ने पर भी प्लेग व हैजे जैसी बीमारियों फैलने का डर लगा रहता है । जिसके कारण लोग बिना इलाज के पटापट मरने लगे तथा गांव छोड़कर जाने लगे । सारी सुविधाएं शहर में ही जाती है । और वह भी पैसे वालों के लिये । टी० बी० का अस्पताल वहां है, दांत का वहां, आंख-कान का वहां, प्रसूति का अस्पताल वहां और यहां के लिये तो जग्गू बहू चमाइन का मुरहार हंसिया, सुकुमार वैद्य की पुड़िया, पंडिताई और सोखाई तथा कस्बे के सरकारी अस्पताल का पानी ही काफी है । और शहर के अस्पताल तक कोई जाये भी तो कैसे ? कोई दुर्घटना होती है, कोई आकस्मिक बीमारी होती है, कोई गम्भीर रोग होता है तो कोई कैसे ले जाये । ये खन्देक, ये खाइयां, ये नाले, ये नदियां, ये रेतियां सदियों से मुंह बाए हुए इस जवार को निगल रही है, सारे रास्ते इनके पेट में समाये हुए है । मीलों तक सड़के नहीं, सवारियां नहीं, कोई कैसे ले जाये

...179...

मरीजों को शहर में ? 33

गांव में दुर्घटनाएं होने पर या प्रसव-वेदना होने पर या कोई बीमारी आदि होने पर चिकित्सक सुविधाएं या डॉक्टर आदि के अभाव के कारण भी लोगों को मृत्यु का शिकार होना पड़ता था। इसके बाद क्रमशः एक समस्या गांव वालों के सामने आती जाती है। जिस प्रकार से प्याज को छीलने के बाद एक छिलकेके बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा छिलका निकलता जाता है। उसी प्रकार ग्रामीण निवासियों को भी इन वास्तविकताओं से ग्रसित होना पड़ता है। इन सब का मूल कारण गांव का पिछड़ापन व आर्थिक अभाव है।

"पानी के प्राचीर" व "जल टूटता हुआ" में गांव में चिकित्सा की व्यवस्था नहीं होने के कारण बीमारियों में ज्यादा से ज्यादा लोग शिकार होते जा रहे थे।

हाय भगवान, यहां डॉक्टर क्यों आयेगा यहां तो आता है मालगुजारी बसूल करने के लिये कुर्क- अमीन, घूस लेने के लिये थाने दार। यहां आती है बाढ़, आती है। महामारी आती है भूख आती है - डॉक्टर क्यों आयेगा ? 33

कहां है डॉक्टर हम लोगों के लिये ? कहां है अस्पताल हम लोगों के लिये ? कहां है भगवान, कहां है ? यहां से वहां तक बाढ़ का शोर और कुछ नहीं। 34

मां, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियों, में भी बाढ़, अकाल तथा महामारी फैली हुई है। लेकिन उनका उपचार करने के बजाय वे भूखी जनता को उपदेश पिलाते है।

मरना कोई अजीब बात रह गया हो तो खबर हो, अब तो मौत हर दरवाजे पर धरना दे रही है, कौन कब चल देगा क्या खबर। 35

मौत जैसी जिजीविषा सब जगह फैली हुई है। ऐसा लगता है कि मौत तांडव नृत्य कर रही हो। मिश्र जी ऐसा कारूण दृश्य बताकर पाठकों के हृदय को तो अभिभूत कर ही देते है। चाहे वे पढ़ने की वजह से केवल आंसू नहीं बहा सकते।

यदि हमारी सरकार इन गांव वालों पर ध्यान दे, उनके लिये उचित व्यवस्था कर दे। तो उनका पिछड़ापन दूर हो सकता है। और चिकित्सा वगैरह भी सुविधाएं की जुटानी चाहिये। खेती के नये साधनों को, फसल की रोकथाम के लिये उचित प्रबन्ध होना चाहिये। तभी कृषक वर्ग आगे की ओर आयेगा तथा

खेती में ज्यादा अन्न उत्पादन होने से देश में खुशहाली भी आयेगी । क्योंकि देश की खुशहाली इन्हीं लोगों पर ही निर्भर होती है ।

6) गरीबी, भुखमरी की समस्या :

आज भारत को गुलामी की जंजीरों से मुक्त हुए काफी साल गुजर गये लेकिन देखने में प्राय: यह आता है कि उसकी अर्थ-व्यवस्था आज भी बहुत ही कमजोर है । इसका कारण देश में जनसंख्या विशाल होने के कारण गरीबी, भुखमरी पहले से ही गुजर रही है । निर्धनता एक समाजिक एंव आर्थिक समस्या है । इसकी उत्पति एवं स्वरूप जटिल है । विश्व के सम्मुख गरीबी की समस्या एक समाजिक, नैतिक और बौद्धिक चुनौती है । गरीबी एक सार्वजनिक समस्या है और समृद्ध देश भी इसकी चपेट से नहीं बच सकता है । विश्व में गरीब देशों की संख्या इतनी है कि उन्हें "तीसरी दुनिया" के नाम से पुकारा जाता है । भारत में कई लोग है जो औसत दर्जे का जीवन भी व्यतीत नहीं कर पाते । वे गरीबी के कारण भयंकर रूप से पीड़ित है । वे सड़कों और फुटपाथों पर अपना दम तोड़ते है । भीख मांगकर अपना जीवन व्यतीत करते है । लोगों की जी हजूरी में जीते है । ऐसी गरीबी भूख और मौत को जन्म देती है ।

मिश्र जी ने ऐसे लोगों को निकट से देखा, एक एक पीड़ा को उन्होनें महसुस किया है । इसी पीड़ा से त्रासद होकर उसको यर्थाथ रूप देकर अपने कथा साहित्य में निरूपित किया है । भूख से बिलखते हुए लोगों का नाटकीय जीवन पशुओं से कम नहीं था । लोग एक एक दाने को पाने के लिये तरस रहे थे ।

पेड़ की छाल आदमी खाता है, कितना अमानुषिक । उफ ! लेकिन मेरे लिये मानव की यह बेबसी नयी नहीं है, मैंने उसके कई रूपों, रंगों के बीच से यात्राएं की है । गोबरहा - पशुओं के गोबर में से अन्न के दाने निकाल कर खाना क्या कम बेबसी है । 36

बाढ़ व अकाल आदि होने से कुसुक सब तरह से बेकार हो गयी और वे लोग एक एक दाने के लिये मोहताज हो गयी । वे जिस दरिद्र अवस्था में जीते है । मिश्र जी ने उसका सटीक यर्थाथ वर्णन किया है । मुर्दा मैदान कहानी में तो भोला

मुर्दा-घर में से टुकड़े को देखकर ललचायी नजरों से उठाने की कोशिश करता है। क्योंकि भूख ऐसी चीज है। जो व्यक्ति को कुछ भी करने को मजबुर करती है। पेट की आग बुझाने की खातिर ही लोग झूठ बोलते है। तथा कई गलत कार्य भी करते है। गरीबी व्यक्ति को अपने को गिरवी रखवाने पर भी मजबुर करती है। सवाल के सामने कहानी में एक गरीब औरत गरीबी और बेबसी के कारण पति के कत्ल करने वाले जमींदार के हाथ बिक जाती है। क्योंकि उसके खिलाफ गवाही देने पर वह उसके बेटे को भी खत्म करने की धमकी देता है। चुप रहने के लिये उसके लिये अनाज वगैरह की व्यवस्था भी करता है। लाचार औरत गरीबी के कारण तथा भविष्य की आंकाशा से डर कर सब कुछ सहन कर लेती है।

इसी बेबसी व लाचारी का फायदा उठाकर तो जमींदार तथा पूंजीपति निरीह जनता पर अत्याचार करते है। तथा उन्हें अपना गुलाम बनाने पर मजबुर करते है।

घर में गरीब, मजबूर किन्तु जैसे जमींदार प्रथा ने इन पर जादू करके इन्हें अपना बना लिया है और ये नहीं सोचते कि गरीब किसानों की बहू-बेटियों या खुद किसानों पर जो अत्याचार करते है, वह खुद पर कर रहे है। 37

न चाहते हुए भी कुछ और जुगाड़ न होने पर उनको मजबुरी से सब कुछ करने के लिये बाध्य होना पड़ता है।

"जल टुटता हुआ" उप० में तथा "पानी के प्राचीर" उप० में जब प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़ या अकाल पड़ने पर कृषकों का सब कुछ तहस-नहस हो जाता है तो उन लोगों की उदासीनता, सन्नाटा युक्त वातावरण का सटीक चित्र मिश्र जी ने प्रस्तुत किया है।

किसी ने भरपेट खाना नहीं खाया कई दिनों से। आसाढ़ आते ही उपवास शुरू हो जाते है। मजूरिनें ही क्यों ब्राहाणों के घरों में भी अभाव लोटने लगता है। घर में कुछ खाने को नहीं है। एक तो यों भी क्या होता है खेतों में। 38

जिनके पास थोड़े से खेत है और जिनके यहां दो महीने से खाने को नहीं होता, जो उपवास पर उपवास करते है उनका क्या हाल होगा ? 39

...182...

पेट की आग को बुझाने की खातिर ही लोग गांव छोड़कर शहर की ओर भागते है । वहां पर कम तौर मेहनत-मजदुरी करते है ।

फिर से खेती का जुगाड़ करने के लिये भी बीज वगैरह के लिये पैसों की जरूरत पड़ती है । जिसके लिये उनको पूंजीपतियों से ऋण लेना पड़ता है । जिसका सूद चुकाते चुकाते उनकी पूरी उमर निकल जाती है । इसके लिये उनको बीमारी की अवस्था में भी या उनके बेटों को उसके बदले सेवा करनी पड़ती है । बनिस्पत दूसरा कोई रोजगार जुटाने से । ऐसे हालतों में उनके दरिद्रता का कोई इलाज सम्भव नहीं होता । उनको दर दर की ठोकरें खानी पड़ती है । भीख मांगने के लिये मजबुर होना पड़ता है । यदि सूद की किस्त समय पर न चुका दी जायें तो उसके लिये मजदूरों की बहू-बेटियों की अस्मत से वसूल करते है । बेचारे सब तरह से मुसीबतों का भुगतान करते है । "दूसरे घर" उप0 में अशरफी की मां के खेत जमींदार के यहां गिरवी होने पर जमींदार हमेशा उसकी बेटी पर ललचायी नजर डाले रखता था । जिसके लिये उसकी मां ने जल्दी ही उसको किसी बूढ़े व्यक्ति से शादी करने पर मजबुर कर दिया ।

गरीबी एक बहुत बड़ा अभिशाप है । जनसंख्या की वृद्धि के साथ साथ आर्थिक व्यवस्था सुलभ न होने के कारण यह दिनोदिन बढ़ोत्तरी की अवस्था पर पहुंच गयी है । क्योंकि आज, स्वार्थपरित, कुटनीतिज्ञ, चाटुकारिता, षंडयत्र आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है । हर कोई अपने स्वार्थ-लिप्सा को शांत करने में लगा है । वह दूसरों के सुख को देकर चिन्तित हो उठता है । अपने लिये सुविधाएं जुटाने के लिये वह दूसरों की छीना झपटी पर उतारू हो गया है । क्योंकि मानवता का तो ह्रास हो गया है । इसके लिये अमीर अधिकअमीर होते जा रहे है । और गरीब और अधिक गरीब।जब सरकार की ओर से आर्थिक उत्पादन के साधन जुटाना तथा खेतीहर कृषकों के लिये आधुनिक तकनीकि, जल, खाद, बीज सामग्री आदि की व्यवस्था की जायेगी जिससे खेती में ज्यादा से ज्यादा उत्पादन हो सके । तभी हमारा देश से गरीबी दूर की जा सकती है । सब लोगों को समान समझकर समान व्यवस्था गुंजित हो सकेगा ।

7§ राजनीति और भ्रष्टाचार, की समस्या :

देश की गुलामी की बेड़ियांसमाप्त होते ही सत्ता को प्राप्त करने के लिये सभी एक दूसरे के साथ वैमनस्य का व्यवहार करने लगे। नेतागिरी करने के लिये अपने से कमजोर वर्ग पर रोब झाड़ने लगे। इसके लिये वे येन-केन प्रकरेण प्रवृत्ति का प्रयोग करके अपना प्रमुख स्थापित करने की चेष्टा करने लगे। सता प्राप्त करने की यह लिप्सा मन में लेकर सभी प्रकार के हथकंडे को अपनाने लगे। जबकि सत्ताधारी को जनता के लोक-कल्याण की भावना को लेकर ही बढ़ना चाहिये। लेकिन आज लोक-कल्याण की भावना हटकर स्वं केन्द्रित पर रह गयी है। व्यक्ति स्वंय अपने लिये-केवल नाम, इज्जत, शोहरत चाहता है। इसके लिये चाहे उसे मानवता का खून क्यों न करना पड़े। जो कुछ नैतिक-अनैतिक कार्य होते है। उसे राजनीति का नाम दिया जाता है। ये लोग-जनता को बहकाकर उनके मन से आशा और विश्वास को दूर करते है। सचमुच ये देश के दुश्मन है। दुश्मन नहीं होते, तो क्यों यह कहते कि नेता लोग स्वार्थी हो गये है - पद के लोभी हो गये है। भला यह भी कोई बात है। नेता देश के लिये जेल गये, घर द्वार सब गंवा बैठे, बाल-बच्चों का मोह नहीं किया - वे ही स्वार्थी, पद लोभी हो जायेगें, यह भी कोई बात है। नेता लोग ठीक ही कहते है कि पांच बरस पर तो आम का फल आता है फिर इतने बड़े देश रूपी वृक्ष में इतने ही समय में कैसे फल आ जायेगा। 50

राजनीति वर्ग के लोग पैसों के बल पर निर्धन व्यक्ति के केवल वोट ही नहीं खरीदते बल्कि उनका पूरी तरह से शोषण करते है। वे पैसो के बल पर गुंडई रखते है। जो डर व आंतक फैलाने का कार्य करते है। जिनके अत्याचारों से डर कर बेबस जनता को चुपचाप उनके इशारे पर चलना पड़ता है। पैसा ऐसा चीज है। जिसके पास आ जाये वह उसका उन्हें मान कर उसका दुरूपयोग करते है। पैसों के बल पर झूठी से झूठी गवाही देने के लिये विवश करते है। पर्दे के पीछे जो भी गलत कार्य होते है। उसे राजनीति का नाम दिया जाता है।

राजनीति में यह सब कुछ क्षम्य है, जायज, है, आप लोग राजनीति और आदर्श को एक करके मत देखिये। इस भावुकता से राजनीति नहीं चलती, बहुत कुछ अप्रिय काम करने पड़ते है विजय के लिये। 51

राजनीति आज केवल शहरों तक ही व्याप्त नहीं है बल्कि इसका रूप बढ़ता ही जा रहा है। आज गांव में भी राजनीति इस कदर छायी हुई है। कि इसके बिना कोई कार्य सम्भव नहीं होता। धीरे धीरे राजनीति राजधानी की ओर से हटकर स्थानीय समस्याओं की ओर उन्मुख होती जा रही है। स्कूल की समस्या है, गांव की समस्या है, इनमें वह राजनीति का प्रयोग कर रहा है, स्कूल हो चाहे गांव चाहे देश, सभी जगह गुंडई भर गयी है। गुंडे राज्य करते है। देश में जो गुंडई बढ़ी है बड़े से लेकर छोटे पैमाने तक उसका प्रतिरोध करने की शक्ति किसी में नहीं दीख रही है। 42

बिना राजनीति के अब गांवों में भी काम नहीं है। गांव में लोग दूसरों को दूसरों से लड़ा कर ही अपना काम बनाना अधिक अच्छा समझते है। इस राजनीति में पराया कोई नहीं है और सभी पराये है। "आकाश की छत" उप0 में रघुनाथ मल अपनी टिकड़मों और शराब के व्यापार से काफी पैसे वाला हो गया और यहां के नेताओं, अफसरों आदि की संगति में उठने-बैठने लगा और स्कूल की राजनीति में भी आ गया और आजकल मैनेजर बन गया है। इनके राज्य में लोगों को महीनों तनखाहें नहीं मिलती, टेम्परेरी है तो टेम्परेरी चल रहे है। काले कारनामों से इसके जीवन के पृष्ठ रंगे पड़े है। गुंडे पालता है, औरतों का व्यापार करता है, कितनी ही हत्यायें इसके गुंडे कर चुके है। 43

मिश्र जी ने अपने कथा साहित्य में राजनीति विद्रूपता को रूप का, उसकी वास्तविकता का पर्दाफाश किया है। जो आज आधुनिक काल में व्याप्त रूप से विस्तृत हो गयी है।

गांव में पंचायत के चुनावों वगैरह में इसका विस्तृत रूप दिखायी पड़ता है। चुनाव के होने पर अपनी तरफ वोट लेने के लिये वे लोग लोगों पर अत्याचार करते है। उनकी फसलें कटवा लेते, खेत उखड़वा कर आग लगवाते है। ताकि इस डर से लोग उनको ही चुने। अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये वे दूसरों को नुकसान कराके फिर उसके प्रति सहानुभूति जता कर और कुछ मदद कराके अपना प्रभाव डालते है।

"सूखा हुआ तालाब" उप0 में राजनीति की आड़ में अनेक नैतिक-अनैतिक घटनाओं की चर्चा की गयी है।

पंच तो मैं हो ही जाऊँगा । व मनौटी की तो मैं नहीं कह सकता लेकिन पूरी चमरौटी मुझे वोट देगी, नहीं देगी, तो पूरी चमरौटी इकट्ठी फूंक दूंगा। "बनारसी बोला ।55 इस तरह वे दावे से जोर-जबरदस्ती से इसे अपना हक मानते है । इस उप0 में गांव के मुखिया स्वंय धर्म की आड़ में दूसरों की बहू-बेटियों के साथ गलत कार्य करते है । इसके लिये उन्हें कोई कुछ नहीं कहता बल्कि उसे राजनीति का कार्य करते है ।

राजनीति में लोग ऐसे ऐसे हथकंडे अपनाते है । झूठ-साज, बाची, षडयंत्र पूर्ण कार्य, गुंडई का बोल-बाला आदि का प्रचलन ज्यादा रहता है । सामने तो मीठे बोल बोलेगे और पीठ पीछे छुड़ा भोंक देते है । जो कुछ भी उल्टा-सीधा हो उसे राजनीति का नाम दियाजाता है ।

"सड़क" कहानी में जंग बहादुर यादव जो गांधी जी की तस्वीर पर पेशाब करने वाले लड़के को एम0 एल0 ए0 बना दिया जाता है । जो राष्ट्रपिता गांधी की बेइज्जत कर देश का भार संभालते है । और खादी पहन कर उसका विकास करते है । दूसरे मास्टर जी है जो आदर्शों की लीक पर चलकर फटी खादी पहने रखते है । लेकिन आर्थिक अभाव को देखकर आदर्शों को दिल में ही दबाकर वास्तविकता से सामना करते है । ऊपर से आदर्शों का ओढ़ना ओढ़े भीतर से कितने खोखले प्रतीत होते है । इस पर व्यंग्य किया गया है ।

"जितन भइया" कहानी में जमीन गांव सभी ले रही थी । इसके लिये रंजन-भइया उस जमीन पर मन्दिर बनवाना चाहते थे । जिससे जमीन की रक्षा भी हो सके और मन्दिर भी बन सके । मन्दिर बनवाने के लिये चन्दा और दान दोनों ही भरपूर मात्रा में मिल जायेगा ।

जमीन की रक्षा करके उस पर क्या उपजा लूंगा ? अरे, गांव-सभा वह जमीन लेकरउस पर पंचायत भवन बनाने वाली है । अब बताओं कहां कहां के चोर-उचक्के आकर बैठेगें उस जमीन पर । इससे तो अच्छा है कि मंदिर ही बन जाये ।

ठीक सोचा जितन भइया आपने । मन्दिर में तो सब पुन्यात्मा ही आते है और सबसे बड़ी चीज तो यह कि आपका नाम भी अमर हो जायेगा औरजमीन भी आपके पास रह जायेगी । 45

...186...

धर्म की आड़ लेकर ये लोग अपना उल्लू सीधा करवा लेते है । शोहरत भी मिल जाती है । आजकल भी अयोध्या में मंदिर बनवाने की पीछे बाजपेयी वालों का यही मंतव्य था । विपरीत पार्टी एक दूसरे को उतका कर अपने लिये प्रचार करवाती है । दूसरे को नीचा दिखाती है । उसमें से अगर कोई जनता के लिये ऐसे कार्य करे जिससे उनका भी समर्थन, सहयोग, बल प्राप्त हो जाता है । भारतवासी धार्मिकता में ज्यादा विश्वास रखते है । इसके लिये लोग इसी कमजोरी का फायदा उठाकर अपना कार्य सिद्ध कर लेते है । गरीब व लाचार जनता कुछ पाने की लालसा में सब कुछ स्वीकारती चलती है ।

जमीन सबकी है, पानी सबका है, सारे इंसान बराबर है । बपई, अब हम लोगों की भी जमीन मिलेगी न ? हम लोग भी अपनी जमीन में आम, जामुन, जौ, मटर, धान, कोदो उगा सकेंगे न, कितना मजा रहेगा । 46

मौं, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो कहानी में ये मंत्री नेता लोग जनता में आश्वासन देकर उन्हें उत्साहित तो करते हैं लेकिन स्थायी रूप से कुछ नहीं करते । इनके वायदे केवल भाषण तक ही सीमित रह जाते है । जिसको एक बार राजनीति का चस्का लग जाता है । वह घर बार छोड़ कर भी पूरी तरह उसमें सक्रिय रूप से डूब पड़ता है । खंडहर की आवाज उप० में पंडित जी जो गांव के शिक्षक थे । लेकिन राजनीति में आने की बाद उनका रूप ही बदल जाता है । जिसको विद्यालय में चरण छूकर सम्मान मिलता था । राजनीति में आने के बाद विपक्ष दल के साथ गाली-गलौच के साथ एक दूसरे को ललकारते थे । राजनीति में आने के बाद उनका नक्शा ही बदल गया ।

पंडित जी कांग्रेसी हो ही गये । बहुत से समाजवादी ठोकरे खा-खाकर कांग्रेसी हो गये, आखिर कहां तक टूटते ? कहां तक आदर्श को खाते पीते ? और कांग्रेस का रास्ता तो पैसे की ओर जाता ही है । तो पंडित जी ने दुकान का कोटा पा लिया । गांव की पटौती शुरू की । 47

"एक वह कहानी में भी राजनैतिक नारों के बीच आम आदमी को जिन्दगी की बिडम्बना का चित्र बताया गया है । नेता लोग समाजवाद लाने की बात करते है । मंहगाई दिन पर दिन बढ़ती जा रही है । तो गरीब लोग कैसे जियेगें ।

उसके लिये दिनचर्या चलाना ही बहुत मुश्किल हो जाता है । अरे भइया, आटा दालि, चिन्नी, तेल, तरकारी, लकड़ी, कोइला, सब के भाव में तो आगि लगी है, आदमी कइसे जिएगे । ताउ दर्द से बोलता जा रहा था ।

अरे ताउ जीयेगें काहें नाहीं हो ? जीएगे नाहीं तो वोट कइसे देगें । एतना त उन्हें जियही के पड़ी कि वोट दे सके । 48

यहां पर व्यंग्य किया गया है कि गरीब लोगों को वोट देने के लिये ही जीना पड़ता है । वरना उनका अपने लिये कोई अस्तित्व नहीं है । उन्हें जिन्दा रहने के लिये भी मजबूर किया जाता है । वे ठोकरे खाते भी जिन्दगी को ढोते चलते है । राजनीति में व्यक्ति का ईमान केवल पैसे तक रह जाता है । वह किसी भी प्रकार से हथकंडे आपनाकर केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति करता है । उसके लिये चाहे उसको मानवता का खून ही क्यों न करना पड़े । एक झूठी शोहरत के कारण वह मानव मानव से दूर होता चला जाता है ।

भारत देश को प्रजातंत्र का देश कहा जाता है । लेकिन यहां प्रजा का शासन तो कहां है । प्रजा का तो हनन होता जा रहा है । प्रजा को उसके अधिकार कहां प्राप्त होते है । इतनी मंहगाई के जमाने में न तो उसे रहने को मकान मिलता है न खाने को रोटी । इन सब अभाव के कारण बेईमानी, घुसखोरी और भ्रष्टाचार पनपती जा रही है । हर कोई आपना उल्लू सीधा करवाने के लिये अपने अफसरों को घूस देता है । जिसते उसकी तो तरक्की होती जाती है । लेकिन निर्धन व्यक्ति को दर दर ठोकरें खानी पड़ती है । आज बिना सिफारिश से या ऊंचे लोगों की पहुंच के बिना कोई कार्य सम्पन्न नहीं होता है । एक हाथ दे और दूसरे हाथ ले वाली बात रह गयी है ।

जब सबको समानता की नजर से देखा जायेगा और कोई किसी के अधिकारों का हनन नहीं करेगो । जब उड़ने वाले नेता हवाई किले न बनाकर वास्तविकता के धरातल को नहीं छुऐगें, तभी देश में खुशहाली नहीं आयेगी ईश्वर यह दिन जल्दी दिखाये, ऐसी कामना करते है ।

...188...

8) अंधविश्वास व धार्मिक प्रवृति समस्या :

गांव में अधिकतर जनता अशिक्षित होती है । अतः वे धार्मिक, पूजन, भूत प्रेत व अंध विश्वासों में ज्यादा विश्वास रखते है । जबकि आज जमाना बदल गया है । लोग कहां से कहां पहुंच गये है । लेकिन गांव अभी भी अपने पुराने पंथियों की लकीरे को पिसटते चलते है । वे उसमें कुछ नयापन लाने की कोशिश नहीं करते है । कुछ लोग ऐसे भी होते है जो समय के साथ साथ चलना चाहते है । लेकिन रूढ़िवादी व्यक्ति उनके इन कार्यों का विरोध करते है । वे उनको अपनी पुरानी परम्पराओं पर चलने के लिये बाध्य करते है । नहीं चलने पर उसका विरोध करते है । रामदरश मिश्र जी ने अंधविश्वास, रूढ़िवादी लोगों की तरफ इशारा किया है । जो लकीर के फकीर बने हुए है । बल्कि इनसे हटकर संघर्षमय जीवन जीते हुए आगे बढ़ते हुए कर्मशील व्यवहार को बताया है ।

"एक औरत एक जिन्दगी" कहानी में भवानी के पति के मर जाने पर गांव की बड़ी-बूढ़ियां भवानी को पूजा-पाठ करने के लिये कहती है ।

बहू, अभी तुम्हें शोभा नहीं देता इस तरह घूम-घूम कर काम करना । अभी नरेश को मरे कितने महीने हुए है और अभी कोदई को मरे कितने दिन हुए है । अरे, कुछ पूजा-पाठ में मन लगाओ । उनकी आत्मा को शान्ति मिलेगी । भवानी ने बड़ा रूखा सा उत्तर दिया - हाँ, ठीक कहती हो, काकी जी, मै पूजा-पाठ में मन लगाऊं और गांव वाले मेरी खेती बारी में मन लगावें और एक दिन पूजा से जागकर पाऊं कि मेरे सारे खेत पट्टीदारों के नाम गये हो और मैं अपने दोनों बच्चों को लिये भिखारिन सी रास्ते पर खड़ी हूं । इसते उनकी आत्मा को शान्ति मिलेगी न । 46

अगर भवानी इन बातों को लेकर तीर्थ यात्रा या धार्मिक प्रवृत्तियों में लगती है । तो उसका घर-परिवार सब चौपट हो जाता है । अतः वह इन बातों को न मानकर संघर्ष करके कर्म करने को ज्यादा मान्यता देती है । क्योंकि कर्म करने से उसका परिवार पलेगा । धार्मिक प्रवृति करना अलग बात है । लेकिन उसमें लिप्त होकर अन्य सभी कार्यों की अवहेलना करना जीवन को व्यर्थ, निठल्ला बनाना है । अतः भवानी इस व्यर्थ की बातो के पचड़े में न पड़कर जीवन के साथ

संघर्ष करती हुई दिखायी गयी है ।

"सूखता हुआ तालाब" उप० में गांव वाले इतने अंधविश्वासी बताये गये है । कि उनको कोई कार्य धर्म का नाम लेकर बताये जाये तो फौरनबिना सोचे-समझे उसे स्वीकार कर लेते है । वे राह चलते लोगों को भी ज्योतिष समझ कर ले आते है। तथा उनको कुछ नहीं मालुम होने पर स्वंय सब के भेद बता कर सबके सामने उगलवाते है । ग्रामीण निवासी उनकी बातों को सच समझकर उनके बताये रास्ते पर चलने को तैयार रहते है । महाराज, वह दोषी है कि नहीं, यह नहीं देखना है । उसे दोषी सिद्ध करना है । इसके लिये आप जो भी पूजा-पाठ चाहेंगें, दिया जायेगा । तीनों की यही राय थी । मानो आप लोग भगवती को घूस देकर झूठ बुलवाना चाहते है । कैसे आदमी है आप लोग । 50

गांव वाले स्वंय छुप-छिप कर-अनेक अनैतिक कार्य करते है । पर्दाफाश होने पर बदनामी से बचने के लिये ओझा या झाड़-फूंक वालों को बुलवाते है । तथा मंत्रों का उच्चारण करके देवी देवताओं की मनौतियां मान कर शुद्धी करते है । वे लोग प्रत्येक छोटे-मोटे कार्यो के लिये धार्मिक अनुष्ठान, पूजन आदि में विश्वास रखते थे । रात को चाहे कितने ही गलत कार्य करें, लेकिन भगवत कथा सुनने तथा धार्मिक कार्य करने से उनके सभी पाप धुल जाते है । ऐसी उन लोगों की मान्यता थी । "आधुनिक" कहानी में भी इसी तरह अनैतिक कार्य करके बच्चे गिरवाते है और कहते है वे भूत बन गये है । फिर ओझा वगैरह से झाड़-फूंक करवा कर शांत करवाते है । इस प्रकार से ग्रामीण निवासी अपनी पुरानी मान्यताओं को लेकर चलते है । "पानी के प्राचीर" उप० में सूखा पड़ने पर या बीमारियों के बढ़ने पर गांव वाले देवताओं की, मान-मनुहार करते है ।

देवताओं की पूजा हो रही है ... रात ... रात फैली हुई रात...बड़े-बड़े मशाल जलाकर गांव वाले गांव के चारों ओर परिक्रमा कर रहे है । जय...जय ... जय डीह राजा की जय... काली माई की जय.... बरम बाबा की जय.. पानी की भांति दिग...दिगन्त तक अंधकार छिल रहा है । धार कपूर, जय... जयकार-मशाल, मानो जमे हुए जीवन के सन्नाटे को चीर-चीर कर आने वाले कल को बुला रहा है । 51

....190...

वहीं अंधविश्वास, भूत-पूजा, अकर्मव्य पुण्य याचना । चमार चमरिया पूजता है, ब्राह्मो बरम पूजता है, क्षत्री डीह पूजता है, मुसलमान जिन्न पूजता है सच तो यह कि सभी एक दूसरे के भूत को पूजते है और केवल भूत पूजते है, चमरिया डीह बरम सभी भूत है और भूत-पूजा आज भी कम नहीं हुई है और सच बात तो यह है कि आजादी के बाद भी शिक्षा-दीक्षा का ठीक विकास नहीं हो पा रहा है । जो अपढ़ गंवार है वे भूत पूजते है और जो पढ़े-लिखे है जिन्हें अपने शिक्षित होने का गर्व है, वे पैसा पूजते है, स्वार्थ का भूत पूजते है, बेटे बेचते है, घूस लेते है, चोर बाजारी करते है । 52

गांव-वाले एक दूसरे की देखा-देखी बात का समर्थन करते है । धर्म के नाम पर सभी कार्य जल्दी सम्पन्न करते है । क्योंकि वे संकीर्ण विचार धारा के कारण उसका विरोध करने से डरते थे । कहीं कुछ अनिष्ट न हो जाये, यह आशंका लगी रहती थी । आज भी गांव में रूढ़ि-वादी, संकीर्ण विचारों के धर्म को मानने वाले है । जो उसी की पुनरावृत्ति करते आते है । उसका बदलना नहीं चाहते है ।

"पानी" कहानी में भी रामदेव बाबू अपने बेटे का मर जाना बेहतर समझते है बनिस्बत हरिजन के हाथ का छुआ पानी पीने से । यहां पर भी उनका धर्म, अंधविश्वास इस बात को मान्यता नहीं देता है ।

9। नैतिक-अनैतिक घटनाओं की समस्या :

चूंकि गरीब व्यक्ति सब तरफ से डर कर, दब कर रहता है । उसकी भावनाएं इच्छाओं का भी दमन करना पड़ता है । वह भी ऐसी अवस्था में जब जमींदार का अत्यन्त दबाव पड़ता है । ऐसी स्थिति में वे सब नैतिक-अनैतिक सभी कुछ स्वीकारते चलते है । यह जो देखने में ऊंच वर्ग है वह अपने कर्मों के कारण ऐसे पतित वर्ग से भी बदतर है । जो अपनी ही बहू-बेटियों की अस्मत से खिलवाड़ कर उसमें अपनी शान समझते है । यह अपना हक समझते है ।

"सूखा हुआ तालाब" उप० में गांव के सभी लोग एक दूसरे के साथ गलत सम्बन्ध बनाये हुए है फिर भी वे लोग अपने को शरीफ समझते है । रविन्द्र धर्मेन्द्र की बहिन लीला के साथ अवैध सम्बन्ध रखता है । धर्मेन्द्र रामदेव की बहिन कलावती

के साथ तथा शिवलाल, शामदेव व धर्मेन्द्र चनइया चमारिन के साथ गलत सम्बन्ध रखते है । देवप्रकाश का भाई अवतार भाई विधुर होने के कारण अकेलापन दूर करने के लिये एक पासिन रखे हुए है । इस प्रकार सभी लोग छिप छिप कर ऐसे गलत कार्य करते है । मोतीलाल अपनी विधवा भाभी के साथ सम्बन्ध बनाने को वैज्ञानिक कारण बताता है । कि उसकी भाभी क्या पूरी उम्र इसी तरह तरसती रहे । विज्ञान की दृष्टि से शरीर शरीर है, उसकी अपनी भूख होती है । भूख मिटाना एक शारीरिक आवश्यकता है, उसमें धर्म-कर्म कहां आता है । मैं उसकी भूख नहीं मिटाता तो छिप कर कोई और मिटाता - और जब पत्नी मायके चली जाती है तब वह भी बहुत अकेलापन अनुभव करता है । इसमें कोई बुराई नहीं है । <u>53</u>

इस प्रकार मिश्र जी ने गांव वालों को नजदीक से देखा व जाना है । तभी वह उनकी इन घटनाओं का पर्दाफाश करते है । जो लोग दूसरों पर तो छीटांकशी करते है लेकिन स्वंय के दामन के दाग को नहीं देखते है ।

10) विधवा समस्या :

प्राचीन समय में विधवा होना एकबहुत बड़ी समस्या थी । विधवाओं के साथ एक अलग तरीके का व्यवहार किया जाता था । हिन्दु समाज में विधवा का दुहरा शोषण होता है । एक ओर वह समस्त मानवीय अधिकारों से वंचित कर दी जाती है । दूसरी ओर उसके चरित्र की नाप-जोख इतनी सुक्ष्म और पैनी दृष्टि से की जाती है । जनता को उसके विषय में नीची से नीची धारणा करते देर नहीं लगती है । मिश्र जी ने उस समय के विधवा समस्या को देखा तथा उसके साथ ही इसका समाधान करने का प्रयत्न भी किया है ।

यदि कोई विधवा की दीन हीन अवस्था का लाभ उठाकर, उसके प्रति संवेदना प्रकट कर अपनी कुत्सित भावनाओं की परितुष्टि का उपादान बनावे तो उस स्थिति में विधवा की दशा कितनी समस्यापूर्ण हो जाती है । "एक औरत एक जिन्दगी" कहानी में भवानी के विधवा होने पर धनपतिया उसके प्रति सहानुभुति जताते हुए उसके खेत वगैरह बो देता है । लेकिन इस अहसान का बदला वह उसके साथ सम्बन्ध बनाकर करना चाहता था । लेकिन भवानी ने उसको ढील नहीं थी । वह भवानी मां की तरह संघर्ष करके अपने जीवन को सींचने लगी बनिस्बत उसके आगे हथियार

...192...

डालने से । मिश्र जी ने यहां भवानी को मांस के लोभी गिद्धों से दृढ़ता पूर्वक बचते हुई कठोर श्रम करते दिखाया गया है । "पानी के प्राचीर उप0 में शामधारी के मर जाने पर उसकी पत्नी गुलाबो की इसी प्रकार खेत जोतने बोने की समस्या का सामना करना पड़ता है । लेकिन सहायता मांगने वालों की नजरें वासना से भरी होती थी ।

एहसान एहसान एक फरेब है । एहसान के पीछे सभी पुरूषों की भयानक जलती हुई आखे घूर रहीं है । जो कोई आदमी एकाध रूपया गुलाबी का उधार दे देता, वह अपने को गुलाबी के मांग का अधिकारी समझने लगता और बहाने बना-बनों कर गुलाबी का चक्कर काटता । गुलाबी को कभी कभी दो दिन तक उपवास करने पड़ते । उसकी देह बिरती गयी, लोगों की भूखी निगाहें उसे और खाये जा रही थी । न जीते बनता था न मरते । गांव वाले उसका रहा सहा रस निचोड़ना चाहते थे । 54

इस प्रकार गांव में विधवा का जीवन जीना बहुत ही दुष्कर हो जाता है । अंत में थकहार कर अपने जीने के लिये विवश होकर वह बैजू का हाथ थाम लेती है ।

दूसरी तरफ विधवा का रहना भी अपशगुन माना जाता था । इसमें उसका क्या दोष । जब गेंदा को उसके भाई ने एक बूढ़े के साथ ब्याहा तो कुछ दिनों के बाद वह विधवा हो गी । वह विधवा जीवन उसको अपने घर में रहना भी अभिशाप बन गया । उसका भाई उसे पेट भर खाने को नहीं देता है । इसलिये सूख रही है । मगर विधवा के लिये सूखकर कांटा हो जाना ही ठीक है । उसकी चटक-मटक, सजावट और उसका मोटा होना कुलच्छन है पति नहीं है तो विधवा जी कर ही क्यों करेगी ? उसे मर ही जाना चाहिये घुट-घुट कर पता नहीं जिन्दा रहने पर कब उसके पांव ऊंचे नीचे पड़ जाये, अंत में गेंदा अपने ससुराल देवर के साथ चली जाती है । 55

नारी के लिये कुंवारी रहना व विधवा होना, दोनों में उसे समाज की पैनी नजरों से मुकाबला करना पड़ता है । समाजिक प्राणी होने के नाते पग-पग पर दूसरों पर आश्रित होना पड़ता है । ऐसी स्थिति में लोगों की घूरती भूखी निगाहें उसका जीना दुर्लभ कर देती है । वह पूर्ण रूप से स्वतंत्र होकर जी नहीं सकती है ।

...193...

उसकी सुरक्षा हमेशा खतरे में बनी रहती है ।

॥ दहेज की समस्या :

दहेज समाज के लिये एक बहुत बड़ा अभिशाप है । लेकिन यह समस्या प्राचीन काल से लेकर अब तक चलती ही आ रही है । विवाह जैसे पवित्र और आत्मीय बंधन के अवसर को आजकल व्यापार का स्वरूप दे दिया गया है । समाजिक प्रथा के नाम से फैले हुए इस दुषण के कारण कई नवयुवतियों का संसार विषमय हो जाता है । मिश्र जी ने इस विष बेल को दूर करने के लिये अपने लेखन में इस समस्या का प्रति-पादन किया है । आजकल के जमाने में लड़कियों की शादी बिना दहेज के होती नहीं है । दहेज के अभाव में आये दिन उन पर अत्याचार किया जाता है। उनको जिन्दा जलाया जाता है । पैसे के अभाव के कारण गरीब लोग अपनी बेटी का ब्याह दुहाजु व्यक्ति से कर देते है । जिससे बाद भी विधवा बनकर लड़की को कष्ट कर जीवन व्यतीत करना पड़ता है ।

मिश्र जी ने उस समय की दहेज के बिना लड़कियों की जो दशा देखी । उसको देख उनका मन बहुत ही तिलमला उठता था । वह उन क्रूर अत्याचारी लोगों के प्रति क्षुब्धता प्रकट करते है । जो पैसों की खातिर लड़कियों की जिन्दगी से खिलवाड़ करते हैं तथा उन्हें बर्बाद करते है ।

"दूसरा घर" उप0 में भी कमलेश का मामा अपनी बेटी का ब्याह एक दुहाजु व्यक्ति से तय करना चाहता है । लेकिन बाद में बी0 एम0 पास बेरोजगार नवयुवक के साथ तय होता है । चूंकि लड़का बेकार होने पर पन्द्रह हजार में रिश्ता तय करते है ।

आजकल के लड़के स्वंय कुछ न कमाने पर लड़की वालों पर निर्भर रहते है । लड़की के पिता के पास कुछ नहीं होने पर उसको मजबुर किया जाता है । वे बेचारे लड़की की खातिर अपनी इज्जत की भी नीलामी करवाते है ।

यह भयानक गरीबी - यह अभाव - मगर लड़की की शादी तो करनी ही पड़ेगी - तीन-चार साल से तो खोज रहा हूं पर कोई मिले तबन - दहेज-दहेज-दहेज सुना था कि स्वराज्य मिलने पर देश सुधरेगा, समाज में क्रांति होगी, सरकार दहेज-लेने वालें को कड़ी सजा देगी, लेकिन पन्द्रह साल पहले बहन की शादी के समय

जो परेशानी हुई थी, वह तो आज और बढ़ गई है । जो लड़का जितना ही पढ़ा-लिखा मिलता हैं, उसका भाव आज उतना ही तेज है । लगता है आज के समाज के लोगों की शिक्षा और प्रतिष्ठा केवल दहेज लेने तक सीमित है । 56

यहाँ मिश्र जी समाज में फैली इस बुराई के प्रति विक्षुब्धता प्रकट की है । यह विषरूपी बेल घटने के बजाय बढ़ती ही जा रही है । शिक्षित व्यक्तियों पर भी व्यंग्य किया है । जो अपने पढ़ने का सारा खर्चा सूद समेत लड़की वालों से वसूल करते है ।

आज तो पारबती की शादी भी है । सुना है, कि वर अधेड़ है और-और सुना है कि उसने खरीदा है, हेराम, यह क्या किया बंसी ने ? बेटी बेचना कितना पाप है ? यह कुकरम उसने क्यों किया ? कुकरम ? गरीबी खुद ही कुकरम है और लोग बेटे बेचते है तो बेटी बेचने में क्या हर्ज है, नहीं नहीं बेटी बेचने की बात और होती है, बेटी बेचना अधरम है और अधरम इसलिये कि बेटी वही खरीदता है जो किसी तरह कमजोर होता है । बुढ़ हो, दुआह-तियाह हो, कोई बरम दोख हो घर में और तमाम बातें । मगर आदमी क्या करें ? दहेज देने की औकात न होतो क्या करें बेटी घर में रखे ? क्या वह अधरम नहीं है । 57

पैसों के अभाव में सभी तरह से समस्याएं उत्पन्न होती है । पैसा व्यक्ति को कुछ भी कराने के लिय मजबुर कर देता है । बेटी वालों को हर समय यह भी चिन्ता लगी रहती है । कब उनकी लड़की अपने घर जायेगी अन्यथा उसके पाँव ऊँचे नीचे पड़ने का डर लगा रहता है । इसके लिये वे जल्द से जल्द जैसा भी दुहाजु या विधुर हो, उसके साथ अपनी लड़की के हाथ पीले करा देते है ।

कुछ लोग ऐसे भी होते है जो अपने से ऊँची जाति देखकर लड़की का रिश्ता तय करते है । जिससे उनके कुल का नाम हो अपने अंहकार की तृप्ति के लिये वे अपने लड़कियों के बलि का मूल्य देते है ।

12) लड़का व लड़की में भेदभाव की समस्या :

आज आधुनिक काल में भी यह समस्या तीव्रतर बढ़ती जा रही है । लोग लड़के को ज्यादा मूल्य देते है बनिस्वत लड़की के । वह यह सोचकर लड़का कुल का

दीपक है, उनका नाम रोशन करेगा, चाहे वह उनका नाम ही क्यों न डुबो दें। इसके साथ ही लड़कियां तो घर के कार्य काज में भी सहायता करती है। लेकिन लड़कियों का जन्म अभिशाप तथा लड़का का जन्म शुभाशीष समझा जाता है। लड़कियों के जन्म से लेकर पालन-पोषण तक उसमें भेदभाव किया जाता है। जब यह भेदभाव स्वंय उसकी मां ही करती है तो आश्चर्य होता है कि स्वयं वह एक लड़की होकर भी लड़की पर अत्याचार क्यों करती है। मिश्र जी ने लड़की, कहानी में इसी बात की ओर संकेत दिया है। इसमें लड़का व लड़की की परवरिश में भी भेदभाव किया जाता है। क्योंकि लड़की परायी होती है। उसे दूसरे के घर जाना होता है। लड़का तो अपने खानदान के नाम में बढ़ोतरी करेगा। यह मान्यता रखी जाती है। लड़की को पढ़ने के लिये अनुमति नहीं दी जाती है। सारा दिन उससे घर का कार्य नौकरानी की भांति करवाया जाता है। भूख लगने पर भी उसे उस समय खाना न देकर सबके अंत में दिया जाता है। वह भी निम्न कोटि का भोजन परोसा जाता है। तथा लड़के को पानी मांगने पर उसके स्थान पर दूध दिया जाता है औरपौष्टिक आवारों का सेवन कराया जाता है।

इस गांव में लड़कियों को कौन खतियाता है ? वे तो पांव तले की जूती है - है राम, लड़की का जीवन भी क्या नरक का जीवन है। लड़के दूध पियेगें, घी खायेगें, मिठाई खायेगें, सामने उनसे छोटी लड़कियां टुकुर टुकुर ताकती रहेगी। लड़का पैदा होने पर मां को एक महीना तक दूध पीने को मिलता है मगर लड़की के पैदा होने पर पन्द्रह दिन तक। जैसे लड़की पैदा होने पर मां को आधा ही दर्द होता है। लड़का पैदा होने पर तोहर होता है। लड़की पैदा होने पर मातम मनाया जाता है। इतना बड़ा अपमान लड़कियों का जैसे कीड़ा-मकोड़ा हो। 58

आज जमाना बदल गया है। लड़कियां भी लड़के से बढ़कर हो गयी है। आज लड़कियां भी नौकरी करके मां-बाप की परवरिश करती है। जबकि इसके विपरित लड़के मां-बाप की बुढ़ापे में सहारा बनने के बजाय स्वंय स्वतंत्र जीवन जीना पसन्द करते है। वे गलत कार्य करके खानदान का नाम रोशन करने के बजाय मिट्टी पलीत कर देते है। इसलिये आज दोनों को समान दृष्टि से देखना चाहिये। दोनों की समान परवरिश करना चाहिये। उनमें अंतर नहीं समझना चाहिये।

...196...

12) शिक्षा का अभाव :

गांव में शिक्षा का अभाव पाया जाता है । खेतिहर लोग अपने बच्चों को पढ़ाते नहीं है । वे सोचते है कि उनको भी आगे चलकर खेती ही करनी है तो पढ़-लिख कर क्या करेंगे । गांव में केवल प्राइमरी शिक्षा की ही व्यवस्था है । उसके लिये टीचर आदि की व्यवस्था भी पूर्ण रूप से नहीं है । यदि कोई किसान या मजदूर का बेटा पढ़ना भी चाहता है तो उसे यह कह कर उसका विरोध किया जाता है । तुमको यह खेती-बारी ही सम्भालनी है । पढ़ने से तुम कलक्टर नहीं बन जाओगें । "पानीके प्राचीर" "जल टुटता हुआ" "आकाश की छत" आदि उपन्यासों में गांव में पूर्ण रूप से शिक्षा की व्यवस्था नहीं होने के कारण भी ग्रामीण निवासी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते थे । यदि वे कही कोई जुगाड कर भी लेता था । तो उसके लिये नौकरी के लिये उन्हें शहर में आना पड़ता था।

लेकिन आज इस व्यवस्था में सुधार हुआ है । आज सरकार की तरफ से गांवों में शिक्षण संस्थान की व्यवस्था कर दी गयी है । जिससे सभी पूरा-पूरा लाभान्वित उठा सकें । शिक्षा प्राप्त करने पर वह जमींदारों के बेहिसाब सूद के शोषण से मुक्ति पा सकते है । शिक्षित होना सभी के लिये परम आवश्यक है । इस प्रकार अंत में हम कह सकते है कि रामदरश मिश्र जी विविध प्रकार की समस्याओं को प्रस्तुत करने में भी निपुणता हासिल की । वे मकड़ी के जाले की तरह एक समस्या के बाद दूसरी समस्या बुनते चले जाते है । जीवन को संपूर्ण समस्याओं के पीछे आर्थिकव्यवस्था का मुख्य हाथ है । मिश्र जी ग्रामीण जनता के अत्यन्त समीप थे । उन्होंने उनकी समस्याओं और कठिनाइयों को स्वंय परखा था। उन्होंने न केवल कहानियों के माध्यम से ग्रामीण जीवन की नाना समस्याओं और प्रश्नो पर प्रकाश डाला है वरन् उसके सुधारात्मक सुझाव भी प्रस्तुत किये है । मानव प्रकृति उसे सुलझाने का प्रयत्न अतीत से करती चली आ रही है, परन्तु शायद समस्यायें अनन्त है । ऐसा प्रतीत होता है कि एक समस्या के निराकरण के मूल में दूसरी समस्या बैठी झांक रही है । और बराबर एक के गर्भ से दूसरी सामने आ खड़ी होती है ।

## सन्दर्भ सूची


| | | |
|---|---|---|
| 01) | जहां मैं खड़ा हूं | पृ0 - 13 |
| 02) | इकसठ कहानियां | पृ0 - 10 |
| 03) | इज्जत कहानी | पृ0 - 439 |
| 04) | -"- | पृ0 - 443 |
| 05) | पानी क0 | पृ0 - 499 |
| 06) | आकाश की छत | पृ0 - 88 |
| 07) | बसंत का एक दिन क0 | पृ0 - 457 |
| 08) | पानी के प्राचीर उपन्यास | पृ0 - 50 |
| 09) | -"- | पृ0 - 63 |
| 10) | -"- | पृ0 - 175 |
| 11) | जल टूटता हुआ उपन्यास | पृ0 - 355 |
| 12) | -"- | पृ0 - 534 |
| 13) | सूखता हुआ तालाब उपन्यास | पृ0 - 36 |
| 14) | पानी के प्राचीर उपन्यास | पृ0 - 141 |
| 15) | जल टूटता हुआ उपन्यास | पृ0 - 47 |
| 16) | -"- | पृ0 - 112 |
| 17) | -"- | पृ0 - 6 |
| 18) | पानी के प्राचीर उपन्यास | पृ0 - 208 |
| 19) | जल टूटता हुआ उपन्यास | पृ0 - 51 |
| 20) | -"- | पृ0 - 339 |
| 21) | पानी के प्राचीर उपन्यास | पृ0 - 112 |
| 22) | -"- | पृ0 - 126 |
| 23) | -"- | पृ0 - 131 |
| {24, 25, 26) | जल-टूटता हुआ उपन्यास | पृ0 - 31, 44, 17 |
| 27) | आकाश की छत | पृ0 - 76 |
| {28, 29) | पानी के प्राचीर उपन्यास | पृ0 - 135, 219 |
| 30) | माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो | पृ0 - 193 |

| | | |
|---|---|---|
| 31 | माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो | पृ0 - 190 |
| 32 | जल टुटता हुआ | पृ0 - 392 |
| 33 | पानी के प्राचीर उपन्यास | पृ0 - 167 |
| 34 | जल टुटता हुआ उपन्यास | पृ0 - 44 |
| 35 | माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो | पृ0 - 197 |
| 36 | -"- | पृ0 - 194 |
| 37 | पानी के प्राचीर | पृ0 - 160 |
| 38 | जल टुटता हुआ उपन्यास | पृ0 - 432 |
| 39 | -"- | पृ0 - 416 |
| 40 | -"- | पृ0 - 4 |
| 41 | -"- | पृ0 - 296 |
| 42 | -"- | पृ0 - 405 |
| 43 | आकाश की छत उपन्यास | पृ0 - 102 |
| 44 | सूखता हुआ तालाब उपन्यास | पृ0 - 102 |
| 45 | जित्तन भइया कहानी | पृ0 - 313 |
| 46 | जमीन कहानी | पृ0 - 293 |
| 47 | खंडहर की आवाज कहानी | पृ0 - 233 |
| 48 | एक पेड़ कहानी | पृ0 - 332 |
| 49 | एक औरत एक जिन्दगी कहानी | पृ0 - 161 |
| 50 | सूखता हुआ तालाब उपन्यास | पृ0- 75 |
| 51 | पानी के प्राचीर उपन्यास | पृ0 - 172 |
| 52 | जल टुटता हुआ उपन्यास | पृ0 - 337 |
| 53 | सूखता हुआ तालाब उपन्याय | पृ0 - 50 |
| 54 | पानी के प्राचीर उपन्यास | पृ0 - 267 |
| 55 | -"- | पृ0 - 203 |
| 56 | जल टुटता हुआ उपन्यास | पृ0 - 35 |
| 57 | -"- | पृ0 - 358 |
| 58 | -"- | पृ0 - 292 |